राजस्थली

लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

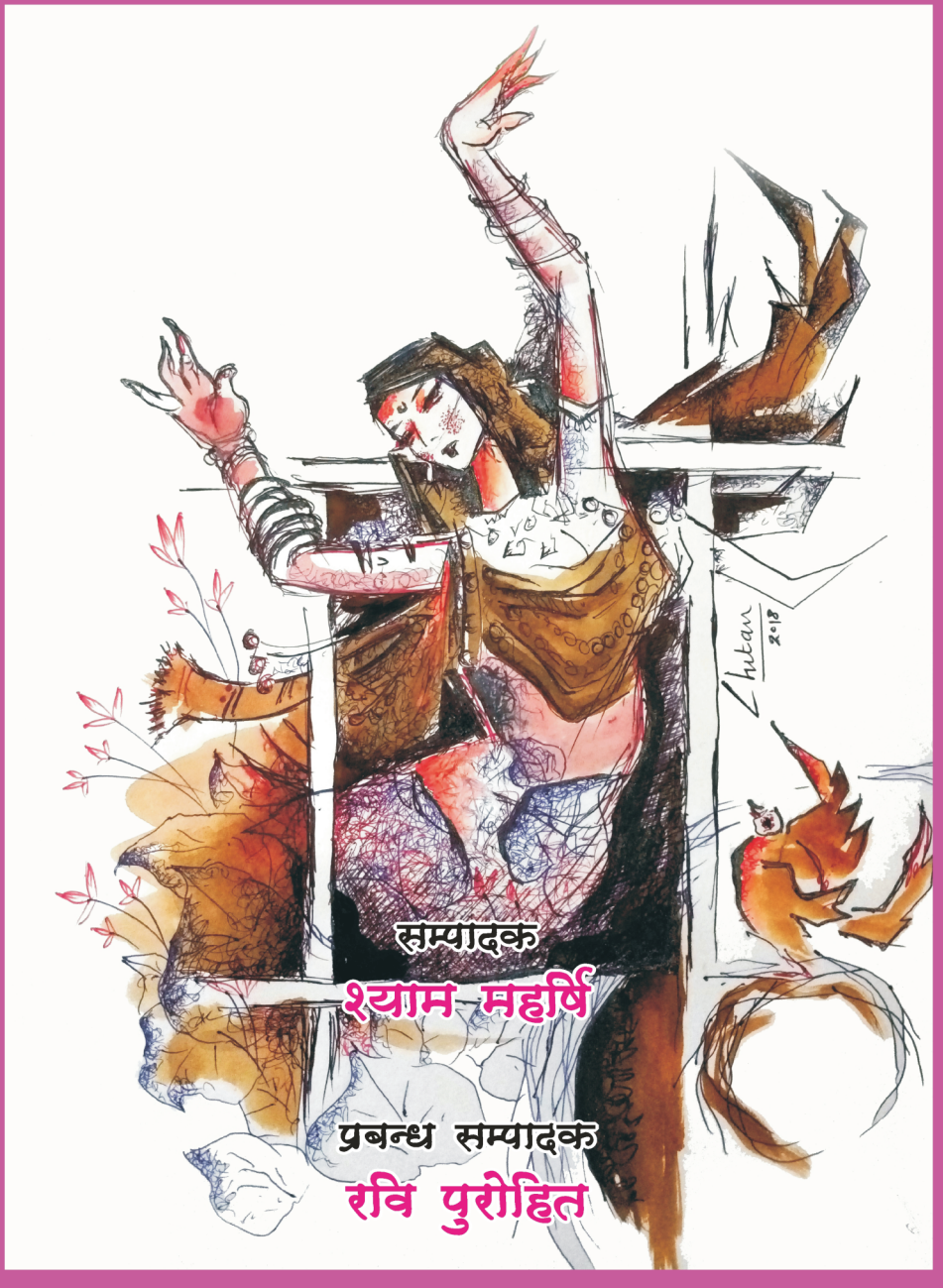

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई-सितम्बर, 2020

बरस : 43 अंक : 4 पूर्णांक : 148

संपादक
श्याम महर्षि

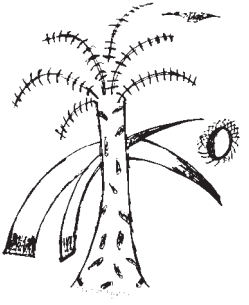

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

आवरण
चेतन औदिच्य
उदयपुर

रेखाचित्राम
किरण राजपुरोहित 'नितिला'
जोधपुर

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

मातृभासा मांय प्राथमिक शिक्षा	*श्याम महर्षि*	3

कहाणी

बरंगो तावड़ो	*किरण राजपुरोहित 'नितिला'*	4
अरदास	*रामकुमार भाम्भू*	14
हक रै खातर	*डॉ. कृष्णा आचार्य*	17

व्यंग्य

कांई-कांई गिणाऊं	*पवन पहाड़िया*	20

कविता

थूं अर म्हैं / सिंथेसाइजर / रंगमंच / मिरतु	*लक्ष्मीनारायण रंगा*	23
मां री जूण	*लक्ष्मणदान कविया*	25
उजास गीत / कैक्टस / मेरी कुजां / माटी रो तवो हंस्यो	*हरदान हर्ष*	27
ओळ्यूं / ठमतां ठौड़ कोनी! / दुख	*हरीश सुवासिया*	29
म्हारी कविता / आसान कोनी / आस	*सुमन पड़िहार*	31

दूहा

रंग रा दूहा	*रतनसिंह चंपावत*	33
तरै-तरै रा ताळा	*मांगूसिंह बिशाला*	35

गजल

चार गजलां	*डॉ. शारदा कृष्ण*	36

व्याकरण

राजस्थानी री मूळ क्रियावां	*बी.एल. माली 'अशांत'*	38

कूंत

परंपरा, संवेदना अर संस्कार में बदळाव रो अरथाव	*कुन्दन माली*	43
लयबद्धता अर ध्वन्यात्मकता री त्रिवेणी	*कंचन आशिया*	47

मातृभासा मांय प्राथमिक शिक्षा

केंद्र सरकार नूंवी राष्ट्रीय शिक्षा नीति मांय टाबरां री प्राथमिक शिक्षा मातृभासा में देवण माथै जोर दियो है। सरकार रो औ पांवडो नैछै ई सरावण जोग है। भारतीय संविधान मुजब इण मांय वै प्रांतीय भासावां ई सामल है, जिकी संविधान री आठवीं सूची में नीं है, पण उण प्रांत रा घणकरा लोग उणनै बोलै-बरतै।

राजस्थान री मातृभासा राजस्थानी है अर उच्च शिक्षा रै पाठ्यक्रम में भी सामल है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग राजस्थानी विसय मांय नेट री परीक्षा आयोजित करै तो राजस्थान रा विश्वविद्यालयां मांय स्नातक अर स्नातकोत्तर शिक्षा रै सागै राजस्थानी मांय पीअेच.डी. री उपाधि भी दी जावै। इणरै टाळ उच्च माध्यमिक शिक्षा मांय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान ई ऐच्छिक विसय रै रूप में राजस्थानी विसय खोल राख्यो है। पण जठै तांई राजस्थान रो टाबर आपरी प्राथमिक शिक्षा राजस्थानी मांय हासल नीं करै बठै तांई इण भासा रो चौफेरी विगसाव संभव नीं है। जको टाबर प्राथमिक शिक्षा मांय आपरी आंख सूं ई राजस्थानी पाठ्य पोथी नीं देखै उणनै उच्च शिक्षा मांय राजस्थानी विसय लेंवता हियाखायी आवै।

प्रदेस सरकार नै इण विसय मांय गंभीरता सूं सोचणो चाईजै अर नई शिक्षा नीति रै त्हैत प्राथमिक शिक्षा मांय राजस्थानी रै प्रवेस रो मारग खोलणो चाईजै। भलांई प्राथमिक शिक्षा रो समूचो माध्यम राजस्थानी नीं बणाईजै, पण तीसरी सूं लेय'र दसवीं तांई री भणाई राजस्थानी साहित्य नै अेक जरूरी विसय रै सामल करीजणो चाईजै, जिणसूं राजस्थान रा विद्यार्थी आगै जाय'र राजस्थानी विसय सहजता सूं लेय सकै। टाबर नै उणरी आपरी भासा अर बोली मांय दियोड़ी शिक्षा जित्ती कारगर हुवै वा दूजी भासा सूं कतई संभव नीं है। आसा है प्रदेस सरकार केंद्र सरकार री इण नूंवी शिक्षा नीति रै त्हैत राजस्थान रा टाबरां नै राजस्थानी में प्राथमिक शिक्षा लेवण रो वांरो हक जरूर हासल करवासी।

—श्याम महर्षि

किरण राजपुरोहित 'नितिला'

बरंगो तावड़ो

वा उकतायगी ही—बिना कारण भीड़ में यूं अेकली ऊभी। अेकलो ऊभो रैवण रो कोई खास कारण होया करै। उण कारण सूं भाव-भंगिमा देखण आळै नै अपरोगी नीं लागै। पण उणरो ऊभणो कीं अपरोगो लाग सकै, क्यूंकै अैड़ो भाव उणरै उणियारै आ ईज नीं रैयो है। वा तो फगत अठीनै-बठीनै बेकाम, बिना कारण उण दुकानां रा उणियारा माथै आपरी उडती निजरां रा अेंकर न्हाखै अर खांचै। हाथ आवै बोरियत रो अेक बोदो टुकड़ो।

हरेक दुकान रै बारलै छेड़ै टंगी चीजां नै यूं तो केई बर अर आज केई अेंगल सूं दसूं बार जोयनै बोर होयगी ही। औ सोधणो बिना काम ईज हो, क्यूंकै कोई कारण नीं हो अठै ऊभो रैवण रो अर जोरांमरजी ऊभनै खुद नै कोई काम मांय लगावणो जरूरी हो जिण सूं दूजां नै लागै कै कोई जरूरी काम सूं अठै मझ बाजार मांय ऊभी है। बिना कारण यूं अठै यूं कोई ऊभ्या करै है कांई? इयां भली लुगाई रो ऊभणो कैड़ो लागै? केई विचार इण बाबत आवै अर जावै। वा उणां विचारां नै पकड़नी नीं चावै। सोचण नै कीं ई सोच्यो जाय सकै। चोखो अर भूंडो। सोच नै छुटी छोड दी बिना डोर री पतंग दांई...

...पण दुकानां नै अजै ई लगोलग देखती जावै। सोचो भलांई कीं, पण देखै वौ ईज निजारो, वौ ईज सामान, वै ईज चीजां, वै ईज उणियारा, वौ ईज दुकानां रो खाको जको इत्ती बार देख्यो जा चुक्यो कै उण माथै निजरां ई घसीजनै जूनी होयगी। ....अर निजारो जूनै-पुराणै फ्रेम दांई मगसो अर साव मंदो। सगळै

ठिकाणो :
सी-139
शास्त्री नगर, जोधपुर
मो. 7568068844

 ISSN : 2320-0995

दुकानदारां रा अेकसा उणियारा। ठाण सूं लैणसर बंध्या जिनावर लागै अर कदैई जीवण रै संचा सूं काढ्योड़ा अेक सरीखा रमेकड़ा।

यूं तो वै ठाला ऊभा ग्राहकां नै अडीकता रैवै, पण थळी आया ग्राहक नै देखतां ई यूं अभिनय करण लागै, जाणै पैलड़ो ग्राहक आयो, जको पातरणो करायग्यो है उण चीजां नै सांवटै है। दुकान में खूब बिक्री होवै औ भरम पैदा करै। आयोड़ो ग्राहक उणनै ठालो नीं समझलै, इण कारण घणकरा दुकानदारां नै औ नाटक करणो पड़ै। अेकर नवै ग्राहक नै देखतां ई उछाह टपकै, पण चीज नै नीं खरीदण रो उणरो लुक देखनै अेकदम मायूस होता जावै। अक्खड़-सो सामान पाछो फिरोलण लागै। मन मांय उण खातर हजार कुणमुणाट उमटै जकी नीं चावतां थकां ग्राहक नै जावण रो इसारो कर ई देवै। ग्राहक जका भगवान है इण टेम औ सोचै कै दुकान आळै में चीज बेचणै रा गट्स कोनी। इण कारण दूजी चीज री मांग करै ई कोनी अर बारै नीसरतो निजर आवै। दुकान आळो जावता ग्राहक रै मौरां पर तीखी निजर रा बाण छोडै, पण उणसूं होवै कांई?

औ बजार ई कांई, पूरी दुनिया रो बजार ई ग्राहकां नै अडीकै, लालच देवै, पण मार्केट रो ग्राफ तो हेठै आयां ईज जावै, ढबै ई कोनी। जरूरतां घणी है, पण ग्राहक जाणै बजारां सूं रूसग्यो होवै। बजारां में, मॉल में भीड़ पड़ै, पण फेर ई मुनाफो कोनी। हर धंधो घाटै मांय ईज जावै। घर अर बाजार कांई ठाह किण खंभै पर टिक्या ऊभा है? च्यारूंमेर मंदी री हाय-हाय मची है, पण लोगां कनै अणूतो पईसो वापरियो है। सिटी मांय तो दुकानां रै इंटीरियर सारू करोड़ां रुपिया घालै, पण ग्राहक उण सूं मोहित नीं होवै। आदमी पइसो खरच करणी चावै, बढिया सूं बढिया चीज खरीदणी चावै, पण बाजार सूं का तो निरास बावड़ै अर का जको ठगीजनै आवै। उणनै अब भरोसो है कै जकी दुकान जितरी चोखी है वौ उत्तो ई प्रेम सूं उणरी जेब खाली कर न्हाखैला। मीठी छुरी दांई। चीज भलांई फूटरी होवै, पण ठगीजण रो खटको जावै ई नीं अर बजार सूं भरोसो उठतो जावै। ग्राहक कांई ठाह किसो अलौकिक तत्त्व बजार मांय सोधै है, ठाह नीं। पण बाजार बिना सरै ई कियां? घरै तो कोई सी चीज नीं निपजै। कोई दूजी दुकान जोवै, पछै तीजी... हर बार दुकान सोधतौ, ठगीजतो जावै। बजार, ग्राहक रो भरोसो खोस लियो, पण अब बाजार ई खाली अर ग्राहक ही खाली।

तीसेक साल पैला नैनकी दुकान पर ऊभा खरीददार 'मिनख' नाम सूं अपणायत आळो दरजो पावतो, पण अब सुंदरता अर भरोसाहीण चासणी जैड़ी एयर इंडिया मुस्कान 'ग्राहक' नै झांसो देवण री खैचळ मांय ईज कूटनीति चालां चालता रैवै, मीटिंगां करै, नित नवा जाळ री रचना करै। जाळ में बजार खुद भी तो फंसै ईज है... आखी दुनिया री चिंता दुकानदार रै उणियारै चिप जावै। तेज बाजतै डीजे सूं वौ खुद सूं बारै आवै। समष्टि सूं व्यष्टि पर आवतो माल पर बैठी रंजी नै कपड़ै सूं झाड़ण लागै।

...बोरियत री अेक लहर पाछी आई अर उणनै उठा सूं व्हीर कर दी। 'अर्बुदा' सूं चालनै पार्किंग रै नाकै पर बण्यै माताजी रै मिंदर नै हाथ जोड़ती धकै सांचरी। कोटी, ऊनी टोपी, हैंडीक्राफ्ट, फैंसी री दुकान रै कनै सूं झील आळै रस्तै चाली। जीमणै कानी मोटी भींत रै स्यारै लैणसर गंदगी अट्योड़ी ही, जिण लारै 'स्वच्छ भारत अभियान' फगत आधो दिख रैयो हो, बाकी सगळा स्लोगन लांबी अकूरड़ी लारै छिपग्या हा। जीमणै कनली हर दुकान आळौ आपरी दुकान सूं सामान लेवण रो इसरात करतो 'कांई लेणौ है सा!' रो जाळ बगावतो। जेबां मांय हाथ घालनै आपरी दुकान री थळी ऊभा उठा सूं निकळतै हरेक टूरिस्ट रै कानां तांई औ स्लोगन पूगायां बिना नीं रैवै। हर दुकान सूं अै स्वर लहरियां आवती रैयी अर वा चालती रैयी । इत्ता बरसां सूं उणनै आदत है इण बजार री अर दुकानआळां री इण टेव-टेर री। वा सुण्यो अणसुण्यो करती धकै बधती गई। पण इण दुकाना री मांयली रचना याद हुयगी है, रटीजगी है। आं दुकान मांयली चीजां रौ क्रम उणरै रट्योड़ो है। बिना देख्यां बता सकै कै कठीनै नैल पॉलिस पड़ी है अर कठीनै सफेद चूड़ो। कठै हैट पड़ी है अर कठै मोजा। कठै रामकां री बंदूक पड़ी है अर कठै रमेकड़ा री कार। कठै कसीदा आळी फराक टंगी है अर कठै सलवार कुरतो।

...ढाळ चढनै ऊपर झील कानी जावतो रस्तो ढाळ उतरनै खाडै मांय पड़तो अदीठ होय जावै। पण वौ रस्तो खाडा मांय नीं पड़ै। वा सांपड़तै उण पर चालती झील सूं जस्ट पैलां आळै बजार पूगी। ऊभगी अेक जग्यां देखनै। ऊभणौ ईज हो। दूजो काम है ईज तो कोनी। चीजां नै देखनै उणसूं जोरांमरजी बंतळ करता बोर होवण रै इतर और कीं काम कोनी।

...औ अेक आम बजार जैड़ो सीन भी है। कपड़ा री, जूतां री, रमेकड़ां री , खाणा-पीण री, रेस्टोरेंट, मैगी-आमलेट रा ठेला, पर्स-बैग री दुकानां हर जगयां लाधै, पण औ हिल स्टेशन राजस्थान रो माउंट आबू है, तो बजार मांय कीं ओर दुकानां जुड़ जावै। क्रोशिया री फराकां री, बंदूक-गन री, टैटू री, केई लारियां चूड़ी-कचकोळी री, सस्ता-महंगा रमेकड़ा, बोर-अनार दाणा, मैंदी रा छापा ,बंधेज रै दुपट्टा-साड़ियां री, जूती-मोजरी री, चाय री थड़ी, पाईनएपल-आंबां री फांक री , बोर-कैरूंदां री छाबां, लस्सी-जळजीरा री मटकियां, रबड़ी री गुल्फी, चावल दाणा पर नाम लिखण वाळो, चाबी-छल्ला अर नेमप्लेट बणावण वाळां री आद-आद। मैकडोलन सूं लेयनै पीजा हट री सीरिज अठै लाध जावै। खाली पड़्यो सीसीडी भी है, बॉलीवुड थीम बेस्ड रेस्टोरेंट भी। 'ओढणा' रो बडो शो रूम है तो ऊंधा पींपा पर झांबू, रानी मेवा अर रायणा री छाब लियां बैठी गमेतणियां भी। 'अर्बुदा भोजनालय' है तो कुईयाराम रो चना जोर गरम रो गळा मांय घाल्यो रास सूं बंध्योड़ो ओडो भी है। इंग्लैंड रिटर्न निशांत अर प्रेमिका लवमैरिज रो 'कैफे शिकीबो इंग्लिश' कॉफी हाउस भी है तो हैवमोर रो खाली पड़्यो नाना भांत री आइसक्रीम

री चमचमाट करती दुकान भी। शिकीबो में कॉफी रै सागै उठा सूं किताबां लेय पढणै अर घंटां गप-चर्चा वाळो इंग्लिश ट्रेंड भी है अर उणरी घरवाळी री सलवार सूट-कुरतां री डिस्प्ले दुकान भी है। पंजाबी ढाबा है तो छुकनी री अमरीकन मकिया उबाळती हांडी भी, मारवाड़ी भोजनालय रो हद चमकीलो बोर्ड है तो कुर्सी-टेबल ढाळ्यां 'कस्तूरा हेयर सलून' रो पैन सूं लिखनै लटकायो ठप्पो ई पूरी जीजीविसा सूं ऊभो है। मनीस भाई अर अनवर चाचा री किराये पर बाईक-स्कूटर देवण वाळी 'बास बाइक्स' भी है अर टाबरां री रमेकड़ा वाळी कारां किराये देवण री दुकान भी। पचास लाख री गाडी जिण फर्राटे सूं नीसरै उठै ई फैंसी देवासण री हाथलॉरी भी...

हाथलॉरी नैना-मोटा री दोय सीट वाळी लॉरी होवै अर धक्को देयनै चलाईजै। घणकरा नैना टाबर उणमें बैठनै राजी होवै। टाबर नै हाथलॉरी में बैठायनै टाबर री मां जद मोबाइल सूं फोटो-वीडिया बणावती सागै चालती रीझती जावै, बळिहारी जावै तद फैंसी आपरै टाबरां नै रोटी री तिरसणा में चिंताबासी लॉरी नै धकेलती जावै। फैंसी सोचो कै हाथलॉरी में टाबर नीं, उणरी रोटी बैठी है। पैला लॉरीवाळी मजदूरी पर उणरो धणी आया करतो, पण आजकालै वा ईज आया करै। धणी ओबाराम नै ग्राहक आपरा टाबर देंवता दोरा होवै । साढी छव फुट रा आदमी रै हाथां में लॉरी ऊंट रै मूंडा मांय जीरो लागै अर डील-डौळ सूं वौ लुटेरो लागै । टाबर चिमक जावै अर लुगायां घोरका करती जोवै। अर उणनै खुदरा टाबर ई सांभणा को आवै नीं तो दूजां रा टाबरां नै कांई केवटै ?

वौ तो सदा टोरडा-घेटा चारया है। समै री मार रै कारण अठै आय पड़्या, नींतर आपरी ढाणियां मांय राजी-बाजी हा। घेटा रां बाल बेचता, ऊधड़ी खेती करता। परसेवा री मीठी कमाई आदर्स कोपरेटिव बैंक मांय जमा करायनै चैन सूं सूत्या रैया। जाण्यौ कै पइसा भेळा होवतां ई ढाणी मांय दस छींणा रो पक्को कमरो चिणवाय लेयसी। पण अेक दिन बरबाद होयनै ताळै लाग्योड़ै ऑफिस साम्हीं दूजां दांई खून रा आंसू बैवाय रैया हा। ऑफिस पर भाटा ई फेंक्या... पण कांई होवणो हो ? उण जैड़ा हजारूं बरबाद होया। उणरी अेकला री कुण सुणतो ? केई दिन आपरी बरबादी नै रोया-धोया अर रोटी रै फेर में पड़्या अठै आय पूगा। वौ टोरडा-घेटा नै सांभतो अब मिनखां नै कियां सांभै ? टोरडा अेक टिचकारी सूं समझै। अेक बुचकार रो दोगुणो असर होवै। घेटा सैकड़ूं अेकै सागै रैव, पण आपरी सींव नीं डाकै। अठै वौ मानखै बिचाळै डरपै। कांकड़ मांय अैवड़ सागै केई मील नाप आवतो, पण माउंट आबू रै मेन बाजार मांय ऊभतां उणरो काळजो धूजै। अैवड़ री सौ जोड़ी आंख्यां नै सांवट लेवतो, पण अठै पचास जोड़ी आंख्यां उणनै डाम चेपती लागै। मरतो-पड़तो सिंझ्या झुग्गी आयनै कीं बिसांयत लेवतो, पण जक नीं पड़ती। कमाई साव ओछी होती। छेवट वा ईज काम पर आवणो चालू करयो अर वौ झूंपड़ी मांय दौरा-सौरा दिन भर टाबर सांभै। रोटी-बाटी सारू आटो होवै तो रोटी बणायनै बजार आवै, नींतर

पाणी पीयनै निसर जावै। टाबरां नै रात री ठाडी बाटी पर मीठो या लूण चोपड़नै वैळावती जीमाय देवै। सिंझ्या रा अदोळी भरयो तेल अर पाव-अधेर आटो ले जावै अर पोय खावै। वा झुग्गी नैड़ै पूगै जणै टाबर समेत वौ ई बेकली सूं अडीकै, जाणै दुनिया मांय अेकलौ है अर उणनै देखण सूं दुनिया मांय पाछो भरोसो वापरै।

...बजार री अै कहाणियां अर वै निजारा केई बार देख लिया है। आज अणूती बोर होवै। उण रा साबजी अेसडीएम साब है, जिणां रो आबू मांय अक्सर ई दौरो होवै अर वा सागै आय जावै। सुणती आई है कै बोत चोखी जगै है आबू। अठै आयां मिनख नै सांयती मिळै। उणनै अठै आवतां नै केई बरस होया। सांयती किसै खूणै में मिळै? आज तांई सोधै है। ठेठ सूं ई साबजी री पोस्टिंग आबू रै नैड़ी-तैड़ी रैयी। कोई न कोई कारण सूं उणां रो आवणो होवै अर वा ई हर बार अेक नवी भांत सूं बोर होवण खातर सागै चली आवै। सांयती नीं सोधै अब। फगत घर री बोरियत सूं आखती होयनै अठै री बोरियत मांय आय पड़ै। बोरियत री टेव पड़गी है—नसो-सो। इण बिना रैईजै ई नीं अर रैवणी चावै ई नीं। इण बिन ठौड़ नीं... इण बिन और नीं! बोरियत उणरी जिनगाणी रो खास हिस्सो है।

अेकली घरै करै तो कांई करै? किणनै रुखाळै अर किणरो काम करै? साबजी रै तो प्रशासन वाळा हजारूं काम। सांस लेवण नै ई फुरसत नीं। तनाव अर काम—बस अै दो सबद ईज उणां री जबान पर रैवै। और कोई बात नीं। बोर होयगी है सुण सुणनै। दूजो कीं बोलै भी कांई? घर में है कांई जिण पर बात करी जा सकै? सूना भूतखाना सूं कांई बात पैदा होवै? उणरी खुद री दिनचर्या महा बोरिंग है। घरै नौकर-चाकर है। उण सारू करण नै कोई काम नीं। कारीगरी रो कोई भी हुनर नीं। कोई दोस्त-साथण नीं अर कोई आण नीं, कोई जाण नीं। फगत सांसां री पूतळी है। कांई करै? समै नै कियां बितावै? उणरी जिंदगी में घणै सुख अर घणै दुख रै अलावा कीं कोनी। घणै सुख सूं वा धापनै काठी बोर होयगी है। दुख उणरो सास्वत है। उण पर सोचै ई कोनी। अेक कानी साबजी महा बिजी अर बीजै कानी वा महा फालतू। मॉल-दुकानां मांय कित्ती शॉपिंग करै? काठी धापगी है। अर करै भी किण खातर? अैड़ो कुण है जिण खातर हेत सूं कीं खरीदै अर वा लेयनै राजी होवै! इण कारण शॅपिंग सूं औकगी है। उठा री चका-चौंधवाळी दुनिया भांय-भांय करै। जीव रो खालीपणो उठै जायनै खदबद सीजण लागै जद गदबदिया जैड़ा फूटरा टाबर उणां री मांवां री गोद्या मांय दिखै तद उणरी नसां खिंच जावै अर वा अणजाणी रीस मांय बळन लागै। अैड़ी रचनावां देखनै उणरो मगज चळपळाटी मचावै। कीं-न-कीं करण नै बेताब होवण लागै। इण कारण इणसूं परे रैवै।

खुद नै वा दुनिया पर अेक तरै रो भार मानै। जिणनै भगवान पईसो तो घणो ई दियो पण सुख नीं... औलाद रो सुख तकात नीं, जको हर जिनावर अर जिनावर जैड़ा मिनखां नै सौरै-सांस मिल जावै। पण उण सारू तो अलभ्य चीज। इणी कारण हर बार

साबजी सागै ई टूर पर चली आवै। अठै आयां सूं तकदीरां नीं बदळै... अर ना ई मन बदळै! फगत आण-जाण री खैचळ सूं कीं टेम पास हो जावै, पण अठै आयनै ई कीं काम कोनी। निकामा हर जगयां निकामा ईज रैवै। अर अब तो काम री टेव रैयी ई कोनी। कोई समै सासू कनै रैवती जद कीं बोछैड़ो करणो पड़तो, पण वो ई मन मारनै करती। जोरांमरजी ईज निभायो उणां सूं। सासरै सूं धापनै साबजी री पोस्टिंग वाळी जग्यां आयनै सांस ली। घरवाळा कीं नीं कैयो। इणी आस में कै स्यात औलाद रो कीं सुख पल्लै लाग जावै। पण हुयो औ कै रात-दिन सागै रैवण सूं उदासीनता वापरगी, पण पल्लै कीं नी लाग्यो। वा खाली ईज रैयी अर जिंदगी ई खाली। भांय-भायं करतो घर बिना राग रो साज बणनै रैयग्यो। साबजी री जिंदगी सरकारी नौकरी रै काम रै कारण कट जावै नींतर तो घरै अैड़ो कीं कोनी जिणनै घर कैयो जाय सकै। महंगी चीजां रो जमावड़ौ है फगत। पण वा कांई करै? कठै जी बिलमावै...

...अबै ई साबजी राजभवन मांय ऑफिस रै काम सूं गया है। होटल में अेकली कांई करती। उणां रै दोय घंटा रो काम है। सदा दांई वा होटल री बजाय अठै आयगी। इण भीड़ै मांय कीं तो बंतळ होयसी, भलांई बोरियत भरी ई होवो। मांयलै हाहाकार नै बारलै हाका-हो मांय घोळण री अेकर ओर कोसिस करसी...

''...आंटी चरखी, गुडिया रा बाल लेवो?'' आवाज री सफाई रै मांय पज्यो संकोच ध्यान खांच्यो।

इण छोरै नै पैली बार देख्यो है। नवो है कांई? हिल स्टेशन रो चतुर खिलाड़ी तो नीं लागै। नयो हो स्यात इण फील्ड मांय, इण कारण मोळो-सो इसरार पण हो। सवाल रै लारै आंख्यां अरज सूं भरी ही। खयालां सूं बारै आयनै उण पर निजर जमाई। बारह-तेरह साल रो छोरो। कुचो होयोड़ा कपड़ा पण साफ-सुथरा। बाल बिखरयोड़ा, पण दिनूगै संवारया हा, अैड़ो लाग्यो। गेहूंओ रंग। स्वर मांय अरज ही, पण दयनीयता कोनी। जी-सौरो होयो। हिल स्टेशनां माथै दयनीय मंगता टाबरां री जमात सूं वा यूं ई घणी चिंतित रैवै। उणनै इण बात सूं सख्त अफसोस है कै और तो सो-कीं सावळ, पण हिल स्टेशन वाळा गरीब छोरां मांय मंगतपणौ अर लपकागिरी वापर जावै। निसरमा अर ठग बणता जावै। पूरी पीढी अर पछै पूरी नसल री चिंता होवै।

पण इण री सरलता दाय आई।

हाथां मांय दस-बारह गुड़िया रा बाल री थैलियां अर कीं रंग-बिरंगी चरखियां अर दूजा रमेकड़ा। सगळी टाबरां वाळी चीजां!... दरद री रीळ-सी चाली काळजा मांय। दुनिया री हर चीज उण कनै है, पण दुनिया री हर बात उण चीज री याद दिरावण री होड मांय लागी रैवे जकी उण कनै नीं है। दुखियै नै और दुखी करणो। किताब मांय देख्या पोस्टर बेबी जैड़ा फूटरा रूं रै फूंबा जैड़ा टाबरिया खयाल में निजर आया अर वा फेरूं गैरी

उसांस न्हाखी। खुद रै सागै ई उण छोरा पर भी तरस आयो। उणरै ई कोई चीज री कमी है! गोळ रोटी री! निजरां उठा सूं अळघी नीं होई। उणनै जोवणो भलो लागै है। उण दोनां नै कोई-न-कोई चीज री अणूती दरकार है। जरूरतां न्यारी है, पण वै अटल है। इण बिना गुजारो नीं। पण छोरो समझणो लागै है। मांगनै नीं खावै बल्कै कमायनै खावै। इण सूं कांई कमाई होवती होवैला? घर कियां चालै? टाबर री स्कूल री उमर है अर अठै मैणत करै! कांई होयो अैड़ौ? धिक है मां-बापां नै!

''थारौ बाप कमावै कोनी कांई रे? दारूड़ियो है कांई?''

नीं चावतां थकां ई पैली बात पर ईज तीर चढग्यो। क्यूं? नीं समझ सकी। इतरी जेज चुप रैवण रो प्रभाव तो कोनी!

''आंटी... चरखी लेयलो... दिन ढळण वाळो है।'' उणरी बात पर कीं कैयो कोनी। विलखो-सो आपरी गांगरत गावतो रैयो।

अैड़ां लोगां री गत वा घणी ई जाणै। आं टाबरां रा दारूड़िया बाप हर हालत में पीवै। लुगाई-टाबर भलांई भूखां मरो, पण रोज रात पीयां बिना नीं रैवै। स्कूल जैड़ी चीज रो तो दारूड़ियां नै सोच होवै ईज कोनी। टाबर भलांई रुळो, पण दारू पैली चाईजै।

''बता तो? थारी तो स्कूल जावण री उमर है। कमाई तो थारै बाप नै करणी चाईजै नीं। थनै मजदूरी सारू मेल्यो है अर खुद दारू पीयनै घरै पड़्यो होयसी... क्यूं...? उणनै कुरेदण री कुबद होयी।

अजेस ई कीं नीं बोल्यो। टगमग जोवै फगत अर कदैई अठी-उठी जोवतो कीं सोधै... स्यात इण बकवास बंतळ सूं बत्ता ग्राहक प्यारा है जका रोटी रा देवाळ है। दूजो दिख जावै तो ठीक रैवै। नीं दिखै जित्तै इणसूं ईज आस है...

''बता तो सही... चुप क्यूं है? भूख लागी है? जीमसी?''

बात में उणरी दर ई रुचि नीं जाणनै छेवट उणरै खास मतलब री बात ईज बूझी।

''चरखी लेयलो... रामका लेयलो... कीं तो लेयलो। पछै जीम लेसूं... अर... म्हारो... बापू... तो...'' कैवतो अटकग्यो।

''कांई बापू?... कीं मत कैय धकै... थारो मूंडो बाप री करणी बोलै है?''

तरस खावतां थकां ई बात खतम करणी चाही अर पर्स में चर्रर्रर करतै मोबाइल नै संभाळण लागी।

''बापू खिलाड़ी हो... अेक्सीडेंट में पग कटग्यो... घरै है...''

सन्न-सी सीटी बाजी मगज में।

पर्स में उछळती निजर पाछी उठै आय जमीं। हाथ पर्स में रैयो अर मन सरम सूं भरीजग्यो। उणनै अफसोस होयो। खुद री बोरियत री सूळ काढनै उणरै हिवड़ै खुबोय न्हाखी ही। उफ!!

दूजै पल काचै मन री खिंवता पर अचरज उमड़्यो। केई ग्राहक उणरी गरीबी पर दया जतावै। उणनै इणसूं मतलब कोनी। लूखा भावां सूं रोटी नीं बणै। उणनै फगत चरखी लेवण वाळा ग्राहक चाईजै, रोटी चाईजै आज री। फगत गोळ रोटी। अठीनै-उठीनै देखतो अळगळाई करतो बिक्री सारू टाबर वाळा माईत सोधण लाग्यो, जका अै चीजां लेय सकै। आपरै बाप रै दुख री होणी नै तो मान ली है। स्वीकार है। अब कोई मतलब कोनी चिंता अर सोच सूं। होयी जकी भुगतै है। अब बस गुजर-बसर रो सवाल है।

केई बार अैड़ा सवाल बूझण वाळा ग्राहकां सूं फेटो पड़ै। कद तांई दुखी सूरत बणावै अर दया सारु पल्लो मांडै? अै आंटी तो कीं नीं लेवै! दूजा ग्राहक मिळै तो कीं पल्लै पड़ै। इयां कोरी बातां सूं कांई होवै। रोटी इयां हाथ नीं आवै।

...छोरो अेक ईज लैण में सारो लेखो उणनै झिलाय दियो अर पड़ूत्तरहीण कर दी। किण मूंडा सूं मां अर भाई-बैन रो बूझै। है जका घरै होवैला अर इणरी कमाई री बाट जोवता होवैला। अब तो सौ बात री अेक बात रोटी है, बाकी सगळी बात थूक-उछाळ।

''थूं अठै ईज ऊभो रैइजै। म्है आऊं पाछी... ढबजै, हो कै? आऊं बस पांच मिनट में...''

कनै वाळी दुकान पर जायनै कीं कैयो अर पाछी आयी।

''थूं यूं कर... थारी ग्राहकी कर... निजरां साम्हीं ईज रैईजै... म्हैं इसारो करूं जद बावड़जै।''

अणसमझ-सो, अभरोसो करतो बात सुण्या बिना वौ दूजै कानी लपक्यो। साव ई खोटी कर्‌यो! लियो कीं कोनी, फगत बातां रा फदका करिया। उंह! अैड़ा ग्राहकां सूं भगवान बचावै।

सांझ साम्हीं दिन भागतो जावै हो। वौ टूरिस्ट री भीड़ कानी भाज्यो।

वा उण ठौड़ ऊभी जोवती रैयी। अब उणरो सगळो बाजार बस अेक वौ छोरो हो, जिण पर निजरां रा अंकोड़िया अटकाय दिया। कठैई अेकला ऊभा टूरिस्ट या अेक टाबर वाळै जोड़ै नै आपरो सामान दिखावतो अर अरज करतौ। दो-तीन बार सूं बत्तौ कोई नै नीं कैवतो। आ बात नोट करी। अर जको अेकर में थोड़ी ई गिनार नीं करै तो मन मसोसनै दूजै कानी चाल पड़ै। ...अेक जणो लारै सूं हेला पाड़नै गुड़िया रा बाल रा चार पैकेट लिया। उणरो जीव सौरो होयो। कठैई हाथां सूं रमेकड़ा नीं लेवण रो ना रो इसारो आवतो अर कठैई माथो धूणनै अर कठैई पुकार पर ध्यान दियां बिना। पण दो-तीन ग्रहकां पछै कोई-न-कोई टाबरां वाळा माईत कीं-न-कीं लेय ई लेवता। देखती दाण उणमें सौराई वापरती।

''मैडम! पार्सल...।''

पार्सल लेयनै उणनै हेलो करणो चायौ, पण वौ व्यापार में बिजी हो। कीं ताळ पछै थाकनै अठीनै जोयो तो वा झट झालो दियो।

उछळतौ कनै आयो जद कीं खुस हो। स्यात रोज सूं आज कीं चोखी कमाई होवैली। उणरै उणियारा निजर गडावतां वौ पार्सल उण आगी कर्‌यो।

''लै, औ खाणो है। थे सगळा घर रा औ जीम लेईजो।'' उणनै हाथ में थमावतां कैयो।

अचाणचक ई झेलीजग्यो। अेक ठैरी निजर पार्सल पर न्हाखी। स्यात घरै बैठा मां-बापू भाई-बैनां नै याद कर्‌यो होवैला या स्यात दिनूगै सूं अब तांई कांई खायो... या पछै बापू री हालत नै... मां नै रोटी सारू खटकरम करती नै... नैनी बहन नै जकी बारणा पर ऊभी बच्योड़ी फरियां अर गुड़िया रा बालां नै अडीकै... या और कीं दूजो?

मोबाइल बाज्यो। काढनै जोयो... साबजी रो कॉल आवै हो। वा मुड़गी जावण सारू।

''आं...टी!...''

पुकार सूं मुड़नो पड़्यो। ''आं...'' इत्तो लांबो करनै कैयो कै 'मां' सुणीज्यो। मुड़्यां पछै '...टी' रो भचीड़ लाग्यो।

''...चरखी रमेकड़ा कीं तो लेयलो... गुड़िया रा बाल... आपरै टाबरां खातर...''

अेकर फेरूं तीखी ल्हैर काळजो चीरती पार होई। हजारूं अणभव है अैड़ै तीरां रा। घाव है काळजै मांय ऊंडा-ऊंडा। फेर भी जीवै है... अस्सी घावां सूं बत्तो दरद हर घड़ी जीवै।

''...किण खातर लेवूं?... गैलो है थूं! टाबरां नै अठै सागै थोड़ी ल्याई हूं... वै तो घरै पढायां करै। यूं टाबरां नै सागै लियां थोड़ी फिरीजै। ...औ खाणो थे सगळा भाई-बैन जीम लेईजो। ठीक है?'' कैवतां मुड़गी। खुल्ली आंख्यां आपरै कैया आं सबदां रै सुख नै देखण लागी। मन री हजार किरचां सांवटी।

''टाबरां नै अठै सागै थोड़ी ल्याई हूं। वै तो घरै पढायां करै...'' खुद रै मूंडै कैयोड़ी बात उणनै मां बणाय दी! ठंडी चंदण सोरम सूं मन रो सूखो आळो पांगर्‌यो। उणमें मगन सुधबुध गमावती चालती रैयी।

''आं...टी।''

आखर रो धोखो पाछो लारै आयग्यो। सपना सूं जगाय दी। हे राम! अब कांई चाईजै? छोरा रो लालच बधग्यो दिखै। भोजन सूं बत्तो कांई देवूं उणनै।

''आंटी कीं तो खरीद लो... गुड़िया रा बाल...'' पार्सल अेक हाथ सूं अर दूजै सूं सामान सांभतो बोल्यो।

''...सुण्यो कोनी तू?... म्हनै रमेकड़ा नीं चाईजै। चकरी भी नीं अर... दूजा कीं नीं चाईजै...।'' आखती होयनै कैवणो पड़्यो। उण रा टाबर होवता तो वा इणसूं खूब सारा रमेकड़ा लेवती।

दुमणो-सो वौ अेकर पार्सल नै देख्यो अर अेकर उणनै। अठीनै-बठीनै देखतो कीं अणबूझ रैयो।

ओ लारो छोडै तो वा जावै। अेक घड़ी... दो घड़ी नीसरी...

दूजै छिण फलांगतो-सो दिख्यो। दसेक मीटर सड़क रै उण छैड़ै नीमड़ै रै कनै पूग्यो। उठै दूबळी-सी भिखारण बैठी ही। तीन नैना टाबर उणरै औळै-दोळै रमता हा। फाट्योड़ा गाभा... अर मैल सूं भर्‌या। पार्सल हेठै रखनै तीन फर्रियां, दो रमेकड़ा अर दोय गुड़िया रा बाल पकड़ाया उणां नै। वै टाबर समझ नीं सक्या कै जिण रमेकड़ां नै फगत देखनै राजी होवै, गुड़िया बाल नै देखनै सोच्यो कै आ कांई चीज होयसी... ? वै चीजां आज बिना मांग्या ई हाथ मांय आय ढबी। टाबरां री मां स्यात इण भांत मेहरबानी रै हेवा ही। लेयनै चट-देणी टाबरां नै खुवावण लागी। टाबर बल्लियां उछळनै ताळी बजाई।

टाबरां रा भाव जोवण नै उणनै वेळा नीं ही। ऊंधै पगां बावड़्यो। भाजतो-हांफीजतो आंख्यां मिचमिची करतो बोल्यो—

''...अेक्सीडेंट में... म्हैं अर बापू ईज बच्या... मां अर बैनां... कोई नीं बची ...खाई सूं बारै ई नीं काढीज्यो।''

❖❖

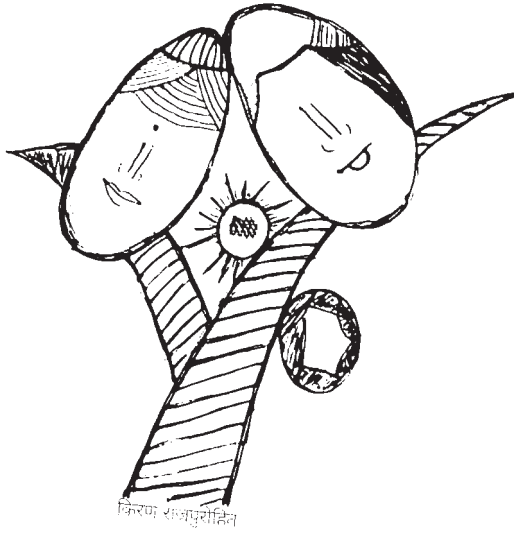

रामकुमार भाम्भू

अरदास

किरसन आज गौरी रा सांस पूरा होवण री अरदास करै हो। बीं सूं गौरी री हालत देखीजै कोनी ही। के हालत हुयगी बापड़ी री! सारो सरीर बारै आयग्यो। अेक दिन बो ई हो कै किरसन बीं री सलामती खातर अरदास करै हो अर अेक दिन औ ई है अबै आ अरदास बो बीं री मौत खातर करै। आखो चितराम रील दांई बीं री आंख्यां आगै सूं घूमग्यो।

पंदरै दिनां री ही जद बीं री मां मरगी ही। किरसन अर बीं री घरआळी घणै जतन सूं गौरी नै पाळी। बाछड़ी रो गौरी नाम किरसन री बेटी राख्यो। सारै घर रा बीं रै आगै-लारै रैवता। सारा रो मोह-प्यार इत्तो हुयग्यो कै अेक मिनट नीं दीखै तो टाबरिया घर नै सिर पर चक लेवै। गौरी बेधड़क बाखळ, आंगण में घूमती रैवै, बिना कोई रोक-टोक।

ढाई-तीन साल री हुयगी तो ई बियां ई खुल्ली घूमबो करती। घरआळा नै परेसान ई करण लागगी ही। ज्यादा तंग करती तो किरसन री घरआळी दो-च्यार सोट करका देवती। औ देख'र किरसन रो पेट बळतो, क्यूंकै सारां सूं ज्यादा हेत गौरी सूं किरसन रो ईज हो।

किरसन सोच्यो, आ है लाडेसर अर घर में आयां बिना रैवै कोनी। आंवतां ई सोटां री पड़ जावै, तो क्यूंनै इणनै अेरियै में चरण नै घाल देवां। किरसन रै गांव कनै महाजन फील्ड फायरिंग रेंज है। लोग आपरी गायां नै चराण खातर बठै छोड आवै अर जद घास मुक जावै तो फेरूं ले आवै। पांच-सात दिनां सूं संभाळ लेसूं, सागै चर'र कीं डील में ठीक हुय जासी अर सोटां री मार सूं ई बच जासी। किरसन खुद नै ईज तसल्ली देंवता थकां सोचै हो।

ठिकाणो :
राजकीय उ.मा. विद्यालय
पालीवाला
पोस्ट-रामसर जाखड़ान
तहसील-सूरतगढ़,
श्रीगंगानगर 335804
मो. 9828440030

 ISSN : 2320-0995

''थे रैवण द्यो ताजी करण नै, कठै ई गम-गमायगी जणै?'' घरआळी कैयो।

पण बो कद मानण आळो हो। गायां रै सागै ई छोड आयो गौरी नै ई अेरियै मांय। पछै किरसन पांच-सात दिनां सूं संभाळ आवतो। गौरी आथण री जोहड़ै पर आ जावती। दिनूगै ई रोही मांय चढ जावती। दो महीनां पछै अेरियै मांय घास सूखग्यो तो किरसन सोच्यो कै गौरी नै घरां ले आवां। बियां ई लारलै केई दिनां सूं संभाळी ई कोनी। किरसन केई जोहड़ियां पर फिरयो, पण गौरी री कोई पूछ कोनी लागी नीं।

''आ आछी हुई मटी।'' किरसन सोच्यो, ''पाळी पोसी गाय गमा दी।''

थक-हार गांव कानी चाल्यो तो साम्हीं अेक मोट्यार मिल्यो।

''भाईड़ा, अेक गाय देखी कै रे?'' किरसन पूछ्यो।

''हां भाई, दोयेक कोस लारै अेक बैड़की बैठी तो है। बीं रै तो तिस मरती रै लापस लागरी है। म्हैं अेक गोळी देय'र आयो हूं, के पतो ठीक होय जावै।''

इत्तो सुणतो ई किरसन बीं मोट्यार रै पगां-पगां भाज पड़्यो।

कनै पूगतां ई रेतो फेंक'र देख्यो, सांस चालै हो। इन्नै-बिन्नै झांक्यो तो साम्हीं ठेकेदार रो कैंप दीस्यो। बो भाज'र कैंप पूग्यो।

''भाईजी, दो जरीकन पाणी अर बुखार आळी गोळी देवो नीं, म्हारी गाय मरी आवै...'' किरसन गळगळो होंवतो बोल्यो।

''ले ज्या भाई, पाणी खातर के ना है...'' ठेकेदार उथळो दियो।

पाणी अर गोळी सूं गौरी नै कीं चेतो हुयग्यो। बा थोड़ी सीधी हुय'र बैठगी। किरसन दो-तीन दिन सेवा-पाणी करी, पण बा खड़ी कोनी हुई। सोच्यो—आ तो मरसी लागै। घरां ले चालां। दवाई-पाणी करां, के ठाह बच ई जावै। किरसन गाडी सूं घरां ले आयो। दवाई-पाणी सूं गौरी चरण तो लागगी, पण बीं सूं खड़्यो कोनी हुयो जावै हो।

''डाक्टर जी, इणनै अेकर ठीक कर देवो नीं। इणनै अेकर टुरती-फिरती देख लूं तो जी-सौरो हुय जावै।'' किरसन किरळाण लागग्यो टाबरां दांई।

''औ अेक टीको है, मंडी सूं ले आव। इण सूं त्यार हुयगी तो ठीक, नीं तो कोई चांस कोनी।'' डाक्टर मोळो पड़तो बोल्यो।

टीको लगायां नै आज तीसरो दिन है। हाल तांई कोई फरक कोनी हो। किरसन सोच्यो कै इयां तो इणरी दुरगति हुयसी। बो भगवान नै कीं बेसी ई मानतो। भगवान सूं गौरी री सलामती मांगण लागग्यो अर इयां करतां-करतां ई किरसन नै नींद आयगी। थोड़ी देर पछै जद आंख खुली तो देख्यो कै ठाह नीं दवाई रो असर हो का किरसन री दुआ रो। गौरी आपरी जग्यां खड़ी ही। किरसन अर घरआळा गौरी कानी दौड़ पड़्या। किरसन कठै सूं ई बिजळी आळो तेल ले आयो अर केई दिनां तांई गौरी रै पगां री मालिस करी। अब गौरी अेकदम त्यार ही।

केई दिनां पछै गौरी ब्याई जणै आपरै जिसी री जिसी लाल गोरी बाछड़ी ल्याई। पण ब्याई जणै उळांस बारै आयग्यो। डाक्टर उळांस सई कर टीको लगाण लाग्यो जणै किरसन आ बताणो भूलग्यो कै इणरै बिजळी आळै तेल री मालिस करयोड़ी है। डाक्टर टीको लगांवतो गयो अर गौरी रै उळांस बारै आवतो गयो।

''हे रामजी, आ के हुई ?'' किरसन बरड़ायो अर डाक्टर नै मालिस आळी बात बताई।

डाक्टर बोल्यो, ''थे पैलां कोनी बता सकै हा कै इणरै बिजळी आळै तेल री मालिस कर राखी है। टीको रियेक्शन करग्यो। अबै मरयां ई लारो छूटसी।''

आज तीजो दिन है। तीन दिनां मांय हालत खराब हुयगी। किरसन भगवान सूं गौरी रा प्राण छूटणै री अरदास करै।

''किरसन भाईजी कठीनै खोयग्या, ''छोटियो भाई बोल्यो, ''गाय मरी पड़ी है। कोटवाळ बुलाओ। अेक घटै सूं हेला मारूं, सुणै ई कोनी। के ठाह, बैठ्या-बैठ्या के बरड़ावै!''

''भाईड़ा गौरी नै म्हैं आपै ई मारली।'' किरसन बाको फाड़ रोवण लागग्यो। भाईड़ो देखतो ई रैयग्यो।

❖❖

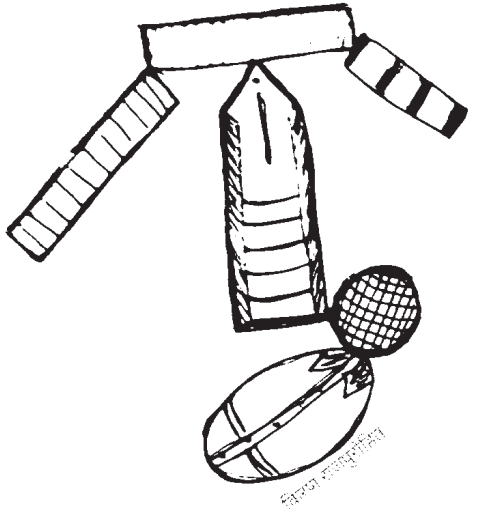

 ISSN : 2320-0995

डॉ. कृष्णा आचार्य

हक रै खातर

जेठ रो महीनो। आभै सूं लाय बरसै। इसो तावड़ो तपै कै घरां सूं बारै निकळण रो ई मन नीं करै। पण मिनख तो बापड़ा दिनूगै सूं सिंझ्यां तांई काम मांय लाग्योड़ा रैवै। बजार मांय घर होवण सूं कदै-कदास जाण-पिछाण वाळा पाणी पीवण रै मिस आ जावै। पण आज भरी दोपारी कोई कुंडी खड़खड़ाई तो म्हैं आधी नींद सूं अचाणचक जागगी। उठ'र बारणो खोल्यो तद देख्यो कै साम्हीं लिछमी ऊभी ही। ''अरे! इत्तै तावड़ै मांय?'' म्हैं हैरान होवती पूछ्यो।

बा मांयनै बड़ती बोली, ''जरूरी काम सूं बाजार आवणो होयग्यो तद थांरै अठै भी आयगी... घणी तिस्स लागी है। कंठ सूखता जा रैया है, पाणी तो पाय दै रुकमां!''

''हां-हां, क्यूं नीं! थूं सोफै माथै बैठ, म्हैं पळींडै सूं पाणी लेय'र आऊं।''

चाडै सूं बीं नैं लोटो भर'र ठंडो पाणी पायां पछै म्हैं चाय चढावण री त्यारी करण लागी। पाणी पीय'र बा बोली, ''थारै पाड़ोस मांय तो घणो ई हाको मच्योड़ो है। इत्तै तावड़ै मांय कुण लड़ रैया हुवैला?''

म्हैं चाय रो पाणी चढावती बोली, ''और कुण, सेठाणी ई लड़ रैयी हुवैला मांगियै सूं... चाय रो पाणी उकळै तद तांई गोखै सूं देखां कै कांई नाटक होय रैयो है!'' म्हैं लिछमी नैं कैवती मांगियै री दुकान साम्हीं खुलण वाळै गोखे रा किंवाड़ खोल दिया। लिछमी म्हारै सागे आय'र ऊभगी। नीचै मांगियै री दुकान

ठिकाणो :
उस्ता बारी रै मांय
बीकानेर 334005
मो. 8619402147

रै साम्हीं सेठाणी लठ लियोड़ी खड़ी ही अर लोगां री भीड़ तमासो देखण खातर पगांभाळ ऊभी ही।

''बारै निकळ रे मांगिया! कांई आपरी लुगाई रै घाघरै मांय लुक्योड़ो है। आज तो म्हैं म्हारा रुपिया लेय'र ई जासूं!'' सेठाणी बारै सूं मांगियै नैं धमका रैयी ही। जद घणो हाको मचायां पछै ई मांगियो घर सूं बारै नीं निकळ्यो तद सेठाणी अेक हाथ मांय मोटो ताळो लियोड़ी आगै बधी अर मांगियै री बंद दुकान रै ताळै माथै आपरो ताळो और लगा दियो।

''देख तो भायली! किसीक धाकड़ लुगाई है!'' लिछमां सेठाणी री करतूत देख'र हैरानी मांय पड़गी।

''धाकड़ तो हुवणो ई पड़ै बैन म्हारी! ...इण मांगियै रो घर इण दुकान रै लारै ई है। सेठाणी सूं केई साल पैलां तीन लाख रुपिया उधार लिया हा। सेठाणी भी बापड़ी दिल री उदार कम कोनी, पण अबै छऊ-सात साल बीतण नै आया है अर औ मांगियो बापड़ी रा रुपिया पाछा नीं करै तो बता अबै इणनैं तो कोई सख्त कदम उठावणो ई पड़सी।'' म्हैं लिछमां नैं बतायो।

म्हैं आगै कीं और बोलती कै याद आयो कै चाय रो पाणी उकळग्यो हुवैला। म्हैं बासै मांय जाय'र देख्यो तो टोपियै मांयलो सगळो पाणी बळग्यो हो। म्हैं बीं टोपियै नैं टूंटी नीचै राख'र पाछी बासै मांय आयी अर अेक दूजै टोपियै मांय चाय रो पाणी चढायो। चाय बणगी तो बीं नैं दो कपां मांय छाण'र लिछमां रै रै कनै आय'र बैठगी।

लिछमां चाय रो कप उठावती बोली, ''अबै बता, आ कांई रामकहाणी है? म्हारै तो खतावळ लाग रैयी है। इसी सैंठी सेठाणी तो म्हैं पैली बार ई देखी है।''

म्हैं बीं री खतावळ देख'र मुळकती बोली, ''गैली, बात आ है कै सेठाणी ठाडै पईसां वाळी है। बजार मांय बीं री सात-आठ दुकानां चालै अर सगळी किरायै माथै है। अेक ई छोरो है अर बो भी सिंगापुर मांय बिजनेस करै। धणी भी होजयरी री दुकान चलावै। दसूं नौकर-चाकर है, घर री पंदरै-बीस गाडियां अर बसां है। थूं कैय सकै कै इणरै घर रै खूणै-खूणै मांय लिछमी रा पगलिया है।''

''फेर भी रुपियां री इत्ती भूख!'' लिछमां नैं सेठाणी रै वैवार माथै अबै और भी अचरज होय रैयो हो।

''अरे बावळी, पैली सगळी बात तो सुणलै। सेठाणी तो घणै आछै भाव सूं ई मांगियै नैं रुपिया उधार दिया हा ताकि इणरै टाबरां अर लुगाई नैं दुख रा दिन नीं देखणा पड़ै। मांगियो बां दिनां मांय घणी ई बुरी हालत मांय हो। कठैई काम नीं मिल रैयो हो। टाबरां री फीस नीं भरण सूं बांनै इस्कूल वाळा निकाळ दिया। पैरण सारू कोई रै ढंगसर

 ISSN : 2320-0995

गाभा तक नीं हा। बापड़ी लुगाई पुराणा गाभां नैं तिब्बा देय-देय'र काम काढ रैयी ही। हालत तो आ होयगी ही कै दो बगत तो छोड भायली, अेक टेम रो खाणो भी मुस्कल सूं जुट पावतो। अैड़ी हालत मांय मांगियो सेठाणी सूं मदद मांगण नै गियो तो सेठाणी बीं री मदद करण सारू झट त्यार होयगी। बा पैली सूं मांगियै रै आस-पाड़ोस रै लोगां सूं बीं रै घर री बिगड़ती दसा रै बारै मांय जाणगी ही। बा मांगियै नैं नीं फगत जूता-चप्पलां री दुकान खोलण खातर तीन लाख रुपिया उधार दिया बल्कै बीं नैं आपरी दुकान भी अेक साल खातर बिना किरायै रै देय दी... पण इण मदद रो नतीजो कांई निकळ्यो! अेक-डेढ साल तांई तो औ मांगियो दुकान चोखी चलायी, पण बाद में नसै-पत्तै मांय आपरी मैणत री कमाई उडावण लागग्यो। आछी खासी दुकान रै होवता थकां ई बापड़ा टाबरां अर लुगाई री दसा पैली जिसी होयगी। अठीनै सेठाणी दुकान रै किरायै रो अर आपरै उधारी रै रुपियां रो रोज तकादो करण लागगी। बा तो आ सोच'र मांगियै रै लारै पड़गी कै मांगियो तकादै सूं घबरा'र पाछो सावळ हुय जासी अर आपरै परिवार माथै चोखी तरै सूं ध्यान देसी, पण मांगियो तो ढीठो निकळ्यो। सेठाणी रो तकादो इण कान सूं सुणतो अर उण कान सूं निकाळ देंवतो। फेरूं अेक दिन सिंगापुर सूं सेठाणी रो छोरो आयो अर बो मांगियै री बात सुणी तद बो रीसां बळतो आपरी मां नैं कैयो, ''अबै अै रुपिया तो डूब्या समझो। बीं दारूड़ियै सूं रुपिया वसूलणा अबै थांरै बस री बात कोनी मा'सा! अबै तो अै दरियादिली रा काम छोड'र घर मांय बस आराम करण री मैरबानी करो। बियां ई घर मांय लाखूं रुपिया आवै, पछै तीन लाख री घात कांई मायनो नीं राखै।''

आ बात सुण'र सेठाणी रो स्वाभिमान छपपटा उठ्यो। बा बेटे नैं कैयो कै बा रुपिया तो वसूल'र ई रैसी। बा दरियादिल है तो आपरै हक रै खातर सख्त भी होय सकै है।

सगळी बात सुण'र लिछमां नैं सेठाणी रो वैवार घणो सई लाग्यो। दो दिन बाद लिछमां नैं रुकमां फोन माथै बतायो कै आखर मांय सेठाणी रै धमकावण सूं मांगियो सई लैण माथै आयग्यो। बो कियां ई कर'र सेठाणी रा दो लाख रुपिया पाछा कर दिया अर अेक लाख साल-भर रै भीतर चुकाणै रो कौल करयो है। सेठाणी रै सख्त कदम सूं बीं रै घरवाळां रै होठां माथै भी पाछी मुळक छायगी। रुकमां री बात सुण'र लिछमां सोचण लागी कै लुगाई री दरियादिली कोई री जिनगाणी बसा सकै तो बीं री सख्ती भी किणी नैं भटक्यै मारग सूं सई राह पर ला सकै।

❖❖

पवन पहाड़िया

कांई-कांई गिणाऊं

पैलड़ै जमानै री बात करां तो बडकां रै मूंडै आ सुणता आया हां कै गांवां मांय कदैई जात-पांत नै लेय'र राड़ नीं हुयी। अेक-दूजै री सुख-दुख री अबखी-सबखी वेळा में पूरो गांव ऊभो रैवतो। किणरै ई बायली रो ब्यांव मंडतो जणै लागती-पागती पळसै-गवाड़ी वाळा दो-दो सैर घी पुगावता अर पाछो टाणो मंड्यां बित्तो ई पाछो आगलो पूगांवतो। इयां करतां टाणो जचै जणां सलटाय लेंवता। बान रो इस्यो ढाळो हो कै जितरी बान खुद भरता बित्ती ई पाछो टाणो पड़्यां आगलो पाछी भरतो। कैवण रो मतलब रळ-मिळ खेती हुंवती। किणी रै धान नीं अंवेरीजतो तो गांव रा सगळा मिल'र संडो करता। इण तरै आपसरी में खेती रो धान सगळां रो बगतसर सलटतो रैवतो।

अबै बगल बदळग्यो। आज तो आंख सूं आंख लड़ै है, भाई माथै भाई टूट'र पड़ै है। जबान खुलतां ई कोजी-कोजी उपमावां रा फूल झड़ै है। पाड़ोसी रो धोरो फोड़'र का सींव तोड़'र खेत खड़ै है। सूनो घर दीखतां ई धवळै दोफारां चोर चोरयां करण नै बड़ै है। पण मजाल है कीं रै ई कठैई कीं अड़ै है। सगळा कैवै कळजुग आयग्यो। कांई ठाह कुण अै बीज बायग्यो। सगळां नै ई स्वारथ खायग्यो। कोई बाढी आंगळी माथै ई मूतण नै त्यार कोनी। मरग्यो सगळां रो ई मांयलो प्यार।

आज तो नूंवा-नूंवा खिलका निगै आवै। पैलड़ै बगत में कोई घटना-दुरघटना हुवती उणनै आस-पड़ोस वाळा लकोय'र राखता, आजकाल तो आगलो मरण जिस्यो हुवतो लागै जणां मरो

ठिकाणो :
बीमा सेवा केंद्र
आयुर्वैदिक अस्पताळ कनै
पो. डेह, जिला-नागौर
राजस्थान 341022
मो. 9414864009

 ISSN : 2320-0995

भलांई मती, पण पैलां वाट्सएप अर सेल्फी चाढनै त्यार कै फलाण जी चालता रैया। म्हारै अेकर इयांकला ग्रुप सूं जुड़्यो रैयीजग्यो अर म्हारा गनायत री चाणचक सुरगवासी हुवण री जाण हुवतां ई म्हारी बीनणी होय पापाजी... होय पापाजी... करती जोर-जोर सूं बोबावणी सरू हुयगी। म्हैं पाछो जद म्हारा छोरा रै साळा नै फोन कर'र पूछ्यो तो वै बतायो कै बापूजी रै हार्ट रो दौरो पड़ग्यो हो। बगतसर अस्पताळ पूगण सूं इलाज लागग्यो अर अबार आई.सी.यू. मांय है। डाक्टर हाल तो हालत खतरा सूं बारै बता रैया है, पछैस तो रामजी जाणै। म्हैं अबै म्हारी बीनणी नै आपरै भाई सूं बात कराई जणां जाय'र वा बोली रैयी। अबै बतावो आप, अै सेल्फी लेवणिया अर वाट्सएप भेजणियां री उंतावळ रो कांई करयो जाय सकै। म्हैं उणनै ई फोन कर'र पूछ्यो जिको म्हनै वाट्सएप भेज्यो हो तो वौ कैयो कै उण बगत तो खतम ई हुयग्या हा। पाछो जीव बावड़ग्यो तो घणी चोखी बात है। इणमें किणनै कांई दोस! जीवता व्हैग्या तो मरजी रामजी री।

कोई सड़क माथै किसी ई दुरघटना सूं घायल पड़्यो आदमी तड़फ रैयो हुवै, पण मजाल है कोई उणनै उठाय'र अस्पताळ पूगाय देवै अर इलाज चालू करवाय देवै। लोगाबाग तो आजकाल इस्या मौका नै जाणै उडीकै। घायल रा च्यार पोज लेय'र पैली वाट्सएप करणो तो जाणै सुरग री टिगट बुक कराणो जैड़ो काम होयग्यो।

अखबार वाळा बापड़ा आं कुपातरां री वजै सूं करमड़ां रै हाथ देय'र कूकै। अखबार नै कुण बांचै? बो तो बोदी खबर लेय'र दिनूगै आवै, पण अै सेल्फी लेवणियां अर वाट्सएप करणिया पलक पतै रै पाण औ ताजा अखबार सैकंडां मांय सगळै भारत पूगाय देवै। बापड़ो महाभारत री बगत रो संजय रो जीव कठैई है अर अै चाळा देखतो व्है तो स्यात बो आपघात करणै मत्तै हुय जावतो हुसी।

पैली गळी-मोहल्लै अर गांव में जे अैड़ी दुरघटना का गमी हुय जावती तो सगळा मिनख उणरै घरां सुख-दुख पूछण नै भेळा हुय जावता अर का पछै आखरी संस्कार नीं होय जावतो बठा तक कोई रै घरै चूल्हो तकात नीं जगतो।

अेक-दूजै रै दुख-सुख में आडा आवतां आपरो सौभाग मानता। आडा तो आज ई आवै, पण आज मदद नीं कर'र वीं रा आंख्यां दीठ गवाह बणण खातर आपरै ग्रुपवाळां नै हाथूंहाथ उण घटना रो वीडियो बणाय'र अवस पूगाय देवै।

किणरै ई घरै जे खाणो हुवै अर कोई पुरसगारी करणियो औ काम अंगेजै तो बो पैली वीडियो बणाय'र सगळां नै बताय देवै कै म्हैं कद रो ई औ काम म्हारै माथै ओढ राख्यो है अर म्हैं आज अणूतो ई बीजी हूं।

आज कोई ई किणरै घरां मैमान बण'र जावो भलांई, कोई सुख-दुख री हथाई करण नै आवो, सगळां रै हाथ में औ खुणखुणियो तो चालतो ई रैवै। बात करै कीं अर बटण दबै कीं। थोथा हुंकारा अठीनै ई देवै अर सांमला सूं बात करता व्है तो बठीनै ई देवै। का पछै आंगळ्यां सूं उथळो सरू होय जावै तो पछै ढाबणियो कुण!

टिंगरया–टींगरयां डूब्या जका तो डूब्या, पण म्हे केई बूढा–बूढल्यां नै ई इण रमतियै पाण आपरा दिन ओछा करतां देख्या है।

मूंडै सूं राम–नाम री माळा फेरण री ई आज जरूरत कठै? कमरै मांय इण कानाबाती नै खोल लेवै अर रामधुन चालू। पछै मूंडै सूं गावण री किणनै जरूरत। बडेरा भजन अर हरजस गाय–गाय'र इयांन ई बगत अर मगज खराब करयो, आज तो कीं हिलोडूलो करण री जरूरत ई नीं है।

छोरा–छोरयां आपरा फेरा इण पाण ई पक्का कर लेवै। घरकां नै चिनोक ई दुख नीं देवै। कोर्ट–कचेड़्यां जाय'र सीधी अगरबत्ती खेवै। राज ई पण इण रिस्ता नै ई मनमेळू रिस्तो कैवै। जात–पांत, छुआछूत, ऊंच–नीच फगत औ मोबाइल ई गमावै। देस रा नेता ई आजकाल बकता घबरावै। औ खुल्लै खातै पाछो साग्यै–साग्यै ई खळकावै। नटण नै जाग्यां नीं रैवै, क्यूंकै लोगबाग हाथूंहाथ वीडियो बणाय'र कांई बक्यो, बो सगळो फोटू समेत पूगाय देवै।

कैवण रो मतलब जे किणी री सीढी रै कांधो ई देवणो हुवै तो वीडियो, किणी नै मसाण मांय भदर करै तो वीडियो, गायां नै रिजका री च्यार पूळ्यां न्हाख देवै तो उणरो वीडियो, चुनावी मीटिंग में जे किणी चुनाव लड़णियै नेता नै माळा पैराय देवै तो उणरो वीडियो। घरां कोई मैमान आय जावै अर वांनै चाय–पाणी पावणो हुवै तो उणरो वीडियो, छांटा अर औसर जावै तो वीं रो वीडियो। खंखळ आभै चढ जावै तो वीं रो वीडियो। अबै तो खाली हंगण–मूतण रो वीडियो बाकी रैयो है, पण स्यात हाल अतरी संस्कृति मरी कोनी, नीं तो औ ई वीडियो लोड करतां क्यांरी अर किणनै लाज!

म्हनै म्हारा दादोसा कैवता, ''म्हैं जद अठा सूं नौकरी करण नै आसाम जांवता जणां घणाई सुगन–सरोधा लेय'र जावता। हथियार लियोड़ो राजपूत, रछानी लियोड़ो नाइ, डावी बोल्योड़ी कोचरी, पाणी री पणियार मिल्यां ई व्हीर व्हैता। इतरा सुगन लियां पछै ई जे बठै कोई ठंड पी जावता तो बीं जमानै री लुगायां पंद्रहा दिन बत्ती सुहागण रैवती, क्यूंकै बठै सूं अठै समाचार पूगावण में पंदरा दिन तो पक्का ई लागता, पण आज तो पंदरा सैकंड पछै ई विधवा हुवणो पड़ै, क्यूंकै औ पलकपतो त्यार है नीं अै समाचार भुगतावण नै। धिन है वाट्सएप, मैसेज अर वीडियो बणावणियां नै अर धिन है बै जिका सेल्फ्यां, वीडियो अर रिकाडां बणावण में आपरो सो–कीं भूल'र दुख नै चेतावण सारू गंठा बीड़ता ई रैवै।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

लक्ष्मीनारायण रंगा

थूं अर म्हैं

थूं म्हारै मनड़ै री मूमल
म्हारै हिवड़ै री मरवण
म्हारै काळजियै री बणी-ठणी
म्हारै अंतस—
जेठवा री ऊजळी!
म्हारै नैणां री सान—
लियां भोर
थूं छाई है आस-आस में
थूं घुळी है
म्हारी सांस-सांस में,
म्हारै सोच रो
सूरजमुखी
थारै दरसणां सूं खिलै
म्हारी कल्पनावां रा कबूतर
थारी सुरता रै सुरंगै आभै उडै।
म्हारै आखर-आखर
थूं सरद-चानणी
इमरत बण बरसै
म्हारै सबद-सबद
थूं सावणी-फागणी
सोरंगी अरथ भर दै
म्हारै भावां रै रंगहलां
थूं केसर-किस्तूरी सी महकै
म्हारै विचारां रै
मधुमासा
सुरीली कोयलड़ी-सी कुहुकै।
म्हारै हेत रै गीतां
थूं बादळ-बीज सी चमचमावै
म्हारै बिजोग ओळ्यां
थूं चन्नण दिवलै-सी
झळमळावै।
म्हारी सै सिरजणां मांय
थूं फुटरापो बण बळ जावै,
म्हारी सै रचनावां
थूं म्हारै हाथां लिखवावै
म्हारा बस हाथ चालै
रचाव थूं ई करावै
थूं नईं, रचना नईं
थूं नईं, म्हैं नईं

सिंथेसाइजर

आपां हां
सिंथेसाइजर

ठिकाणो :
रंगा कोठी, सुकमलायतन
डी-96-97
मुरलीधर व्यास नगर
बीकानेर 334004
फोन : 0151-211060

ISSN : 2320-0995

इण सिंथेटिक सभ्यता रा—
जिका दूजां रै सुरां में
सुर तो मिलावां,
दूजां री लय-ताल में
खुद नै ढाळां
सामल बाजा बण बाजां—
पण खुद रो संगीत
नीं रच पावां
खुद री लय-ताल
नीं पकड़ पावां
बस, पराई आंगळ्यां सूं
बाजता जावां, बाजता जावां
बस, बाजता ई जावां।

रंगमंच

बार-बार
रंग-रूप बदळ'र
वेस-भूसा पलट'र
भेज दियो जावूं
इण रंगमंच पर
जिणरी
चकाचूंधी रोसण्यां
झिळमिळ-इंदरजाळी
अंधारा
मीठी-मस्तानी हंसी में
नसीली फु सफ साटां सूं
हुय जावूं चमगूंगो अर
भूल जावूं कै
म्हैं कुण हूं?
म्हनै निरदेसक
क्यूं भेज्यो है?
कांई करणो है म्हनै?
किसो पात्र निभावणो है?
इण हो-हल्ला-सोर मांय
प्रॉम्पटर री आवाज भी
दब जावै—
आज भी
गाफल-अणजाणो सो
खड़्यो हूं
इण रंगमंच माथै
अर
नाटक रो समै
बीततो जा रैयो है
रीततो जा रैयो है

मिरतु

ओ बल्ब
घणो बळ्यो, घणो चाल्यो
इण माथै
समै री गरद जमगी
इणरी रोसनी कम हुयगी
इणरो तार-तार हिलग्यो
झप-झप करण लागग्यो
औ नीं जाणै क
अचाणचक फ्यूज हुय जावै
कद सदा खातर बंद हुय जावै
किणनै पतो है
हर बल्ब री
आ ई प्रकृति है
हर बल्ब री
आ ई नियति है।

❖❖

ISSN : 2320-0995

लक्ष्मणदान कविया

मां री जूण

मां!
थूं देंवती आई है
सदियां सूं
पण अजै थाकी कोनी
कोनी आवण दे तूं
दुमनापणो
कोनी मानी हार
इण देण रै उपकार सूं।
दुखतो तो व्हैला
थारो ई डील
पीड़ अर कस्ट सूं
पण कोनी आवण दे थूं
थारै मूंडा माथै।
प्रसव पीड़ा
सहती-सहती
गाळ दी आखी जूण
इण दोघड़चिंती मांय
कै कदास तो कोई जलमसी
म्हारी कूख सूं सपूत
जिको कर देवैला
घर-गिरस्थी रो दाळद दूर।
अेक दो ई नीं,
थूं जणिया
आठ-आठ टाबर
पण थारी सुद
लेवणियो अेक ई
जोगो कोनी जलम्यो सपूत।
भखावटै-भखावटै
जाग'र करै दुवारी
चारो गेंरै ध्रावां
चुगांवै बाछड़ा
करै बिलोवणो
चायपाय सबां नै
करै त्यार टाबरां नै
स्कूल जावण सारू।
कलेवो करा'र
टीफण करै त्यार
टाबरां रो।
दौड़-दौड़ काम
करतां-करतां ई
थारै पांती आवै
ओळबा, जइयां अर गाळियां।
कंतै री लापरवाही
घालै थनै फोड़ा।
घर में कोई चीज
लावण री कदैई

ठिकाणो :
ग्राम-खेण
पोस्ट-मारवाड़ मूंडवा
नागौर (राज.) 341027
फोन : 9468557616

ISSN : 2320-0995

कोनी करै गिनार
थारो बालम।
सब नै चाईजै बगतसर
रोटी अर लगावण।
पण कोठो
खाली व्है जणां
कीकर पूगै पाणी खेळी में।
आस-पड़ोस सूं
उधार लाय'र ई
थनै तो टंक टाळणो ई पड़ै।
मांगण नै आवण वाळा
मंगता नै ई
घर-गिरस्थी रो
धरम हुवै
हाथ उत्तर देवण रो
आ बात थूं
आछी तरियां जाणै।
बारस, अमावस
पूनम नै महाराज नै ई
काची रसोई देवण रो धरम ई
थासूं अछांनो कोनी।
पामणा पई आयां
घर सारू
पामणा री खातर करणी
पण कदै-कदैई
पामणा सारू ई
घर नै बिसराय
मिजमान रो धरम
निभावणो पड़ै थनै
सब रो ध्यान राखतां-राखतां
थूं भूल जावै
खुद रो ध्याना

सासू-सुसरै री सेवा
नणदल रा नखरा
जेठाणी रो जोर भारी
पड़ै थारै माथै।
मां!
थूं कांई-कांई
कोनी करै सहन
आणै-टाणै, सगाई-ब्यांव में
आयां घर में
रात-दिन
तनै कोढो करणो पड़ै।
टाणो सुधरियां
जस लोगां नै,
कीं कसर रैय जावै तो
भूंड रो ठीकरो
थारै ई माथै फोड़ै सगळा।
आमद कम अर खरच इधक
व्हैणा सूं करजो तो
व्हैणो लाजमी।
आयै दिन कंत री करड़ावण
मौसा थारै सारू त्यार रैवै
लापरवाही करै दूजा
अर अळदो आवै थारै ऊपर
क्यूंकै थूं ईज है
सगळां नै परोटण वाळी।
करतां-करतां काम
कसर काढण में
कोनी रैवै लारै कोई
मां!
कांई थारै भाग में
औ ईज लिखियो भगवान?

❖❖

ISSN : 2320-0995

हरदान हर्ष

उजास गीत

चिड़ी री चिंह-चिंह में है
पाखी री भूख-प्यास
चिंहचहाती वा उडती फिरै
करै दाणा-पाणी रो जुगाड़।

चिड़ी री चिंह-चिंह में
अेक तरपत राग
भरपेट वा सुणती फिरै
पेट भरण रो सनेसो।

चिड़ी री चिंह-चिंह में है
मां री ममता
लाडभरी वा चिहुंकती फिरै
करती अपणै चूजां नै लाड।

चिड़ी री चिंह-चिंह में है
सूरज गाळी रो गीत
उजास भरी वा गावती फिरै
उठो जागो! उठो जागो!!

ठिकाणो :
ए-306, महेश नगर
जयपुर 302015
फोन : 9785807115

कैक्टस

ऊग आया है
लोंगाड़ां री आंख्यां
अणूता कैक्टस।

वै गळी-गळी
उडता फिरै
जड़ कट्या झाड़-सा
कै बहू! इब घणो दोरो
चालणो-फिरणो
बस्ती री कंटाळी राह।

ISSN : 2320-0995

मेरी कुजां

मेरी कुजां रो घर मायरो
कोई खेलण रा दिन च्यार।
अेक रायवर आसी बण बाई वर
उड जासी मेरी चिड़कली
चुण कै दाणा चार।
म्हैं उणियारो ढूंढसी
यादां री पांख लगा'र।
बाबुल मन उमड़ै घणो
लाडो! फिर-फिर आवजो
करणै वाभोसा दीदार।

माटी रो तवो हंस्यो

माटी रो तवो हंस्यो
उछाह उमंग में मां
देखो! देखो? टाबरो
चक-चक दांत दिखावतो
अपणो तवो हंसतो जाय।

माटी रो तवो हंस्यो
टाबर-टोळी साथ
फूल्यो फलको देख'र
आज्यै प्यारा पांवणा
दादो सुगन मनाय।

मधरी-मधरी मां हंसी
मधरो-मधरो बाप
दादी बोली हुळस कै
घर आंगण आसी पांवणो
म्हारै तवा रोटी खाय।

फाळी-सी घर आडतो
विस्वासां रै पाण
दादी उचक उडीकती
सुख-दुख आ बतळाय।
❖❖

ISSN : 2320-0995

हरीश सुवासिया

ओळ्यूं

अंधारै उजाळै
जद नींद आवै
बापड़ी बतगळ
बारणो खटखटावै।
पाणी मांय बैठी
बैरण बातां
आंख्यां री कोरां भीग जावै।
म्हैं जाणूं
बीत्योड़ी बूढी भींतां
हरमेस काम आवै
फगत विग्यापन मांडण।
हवा रै अेक झोंका सूं
सगळी सांतरी
सींवण उधड़ जावै
उजाळै रै नांव
तावड़ो तरड़ जावै
अर घसीट जावै
आंगळ्यां री रेख।
घरां मांय घुसण
सिंझ्या अर सवेरा
ओळ्यूं अेकली
किंवाड़ खटखटावै।

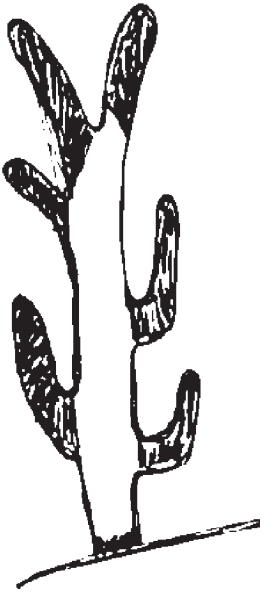

ठिकाणो :
मु. पो. देवली कलां
जिला-पाली 306306

ISSN : 2320-0995

ठमतां ठौड़ कोनी!

ऊंचा आभै
उडण री हूंस।
लेय'र मनड़ो
बणाय पंखेरू।
साव सगा जाण
तुरत जुड़ मांडै गठजोड़।
जीवण–जातरा
दीठै दोय छोर
अधूरी इच्छावां
अणंत आभो।
मैणत म्हारी
उडती पतंग है
चित चकरी, चाल चंग है
हूंस री डोर
मीठी उमंग है।
इब तो
पगां चालतां पगोतिया बणै
हूंस नै हिया री ठौड़ है,
जिको बैठा राखै
निजरां माथै
बै रिस्ता बेजोड़ है।
पण कियां?
अेक पख फेरूं
क्यूंकै—
जिनगाणी जीवती
साच्याणी खतोड़ है,
जिणमें नित नूंवा
बैंवता मोड़ है
ठमता नै कदै
कोई नीं ठौड़ है।

दुख

दुख तो ईख री
गांठ ज्यूं हुवै।
पोथी छपतां
आखर ज्यूं हुवै।
दुख घणै
अंधारै री ओट हुवै।
कपटी उणरी काया
मन मांय खोट हुवै।
दुख कदै
तन नै तरासै
हटौटी री चोट ज्यूं
छियां देवै
भींतां री ओट ज्यूं।
दुखती रग सूं
अमूझता मन माथै
कचोट हुवै
उणरै उफणतां ई
विस्फोट हुवै।
दुख में
लूटती माया रो
टूटती काया रो
चौफेर फैलाव है।
दुख रा दरसाव है
मुसीबतां रो मकड़जाळ
दुख दे दरिया
गूंथी गरीबी ई काळ।

❖❖

ISSN : 2320-0995

सुमन पड़िहार

म्हारी कविता

म्हारी पीड़
म्हारै मनड़ै रा भाव ईज तो
ढाळिया हा म्हैं
म्हारी कविता में।
भासा रो तो ग्यान नीं
पण सिसकता, उफणता
भावां रो घणो अैसास हो।
दबियोड़ा सपना
कदैई आंख्यां री कोरां तांई
आ जावता
तो कदैई मनड़ै रा अरमान
गळै सूं बारै नीं आवता।
हंसतोड़ै होठां रो साच
आंख्यां रो पाणी बतळावतो।
कुण कैयो कै मोटा आखर
कविता नै रूप देवै
कविता तो भावां सूं
उफण्योड़ी नदी है
जका कलम नै
पतवार बणा'र
भावां रै हौसलै सूं
साहित्य रै
किनारै तांई ले जावै।
कविता मन रा बोल हुवै
अबोल नीं हुया करै
जिण रा जैड़ा भाव
कलम री स्याही वैड़ी।

आसान कोनी

इतरो आसान कोनी
सूरज बणनो
अेक चक्र रै साथै
चालतो रैवणो हरमेस
खुद री ई किरणां नै
करणो खुद सूं दूर
आसान कोनी व्है
घड़ी-घड़ी खुद नै ईज
जळावणो नै लोगां नै
रोसनी देवणो।
आसान कोनी व्है
हर बगत त्यार रैवणो
लोगां रै जीवण सारू
अगूणो म्हारी दिसा
बताय दी उद्गम री

ठिकाणो :
द्वारा गोपालसिंह राठौड़
39 ए, शक्ति नगर
सैकंड रोड, पावटा
जोधपुर
मो. 8875005502

आथूणो म्हारै अस्त री
बो ईज चक्र
बरसां सूं निभाय रैयो हूं
ज्यूं आ लुगाई
निभा रैयी है
आज तांई
सोरो कोनी
लुगाई बण जावणो
नीं कदैई खुद रो
सोचणो, नीं जीवणो
हरमेस जीवणो
दूजां रै खातर।

आस

अे धरा!
म्हैं म्हारी जीयाजूण
थारै आसै-पासै
धान निपजावतो
पूरी करूं
म्हैं करसाण
जलमती ई थारै साथै
अबोल भाव सूं
जुड़ जावूं हूं
हळ नै हळोतियै सागै
सगळो जीवण म्हारो
थारी आस-निरास सूं बंध्योड़ो
म्हैं म्हारी जीयाजूण
पूरी करूं हूं
थारो दरद
थारो मरम
म्हैं जाणूं हूं
म्हैं उण दरद सूं
अछूतो कोनी
तरसती थारी
आंख्यां जळजळा
म्हारा नैण
बादळी री बाट जोवती
तपती अगन में।

अे धरा!
थूं कितरो धीरज धरै है
म्हैं कोसिस करूं हूं
धीरज धरण री
पण
बीं बगत म्हारो
घर-परिवार
म्हारा टाबरिया
चितकबरी घोनी
उण रा धोळिया बकरिया
गोरकी गाय
काळकी मिनड़ी
म्हारै धीरज नै
हिला देवै
म्हैं बीं बगत
हार'र बैठ जावूं
म्हैं थारै आंचळ में
दहाड़ा मार'र रोवूं हूं
म्हैं हारूं हूं
पण थारो सोचनै
अे धरा,
अे मावड़ी!
म्हैं खुद नै
थ्यावस बंधावूं हूं।

❖❖

ISSN : 2320-0995

रतनसिंह चंपावत

रंग रा दूहा

शीश मुकुट सम सोवाो, पेच भलो पिचरंग।
मान बधावै मोकळो, रंग ज साफा रंग।।
आडो फिर-फिर अड़थड़ै, मस्तक चढै मतंग।
सामधरम सब सूं सिरै, घोड़ां नै घण रंग।।
झाटक जबरी झेलता, जितण झुझारां जंग।
दीठ रुखाळा देह रा, रंग बखतरां रंग।।
आन बान राखै अखंड, शूरां रै नित संग।
त्राटक तीखी तेग तूं, रंग रणथळी रंग।।
बाढाळी बढ बैवती, आडाळी अड़ अंग।
तलवारां घण तोड़ती, रूड़ी ढालां रंग।।
धार अणी धवळी घणी, पळकै पीठ पमंग।
वाल्हो लागै वीर नै, नेजा नै नवरंग।।
सबद बाण भल साधियो, पिरथी राज प्रसंग।
गौरी गुड़ियो गोखड़ै, रंग सरासन रंग।।
गोळी लगतां ही गुड़ै, चमू चढी चतुरंग।
सधै निसाणा सांतरा, रे बंदूकां रंग।।
कर सूं सीधी काळजै, ढाबण रो नहीं ढंग।
व्हारू रै हत्थ वल्लभी, जमदण नै जसरंग।।
दसूं दिसा में दिव्यतम, निकळै नाद निहंग।
निवण करूंह सुघोष नै, रूड़ा देय'र रंग।।
कम्पै कायर काळजा, दुस्मण व्हैजा दंग।
रण में गूंजै घोर रव, रंग नक्कारा रंग।।

ठिकाणो :
221, अमर आशीष
मार्ग सं. 19, हनुवंत बी
बीजेएस कॉलोनी
जोधपुर
मो. 9413139341

आम छाछ दहि आमली, शरबत कुल्फी संग।
पासा चौपड़ पोळ में, रंग उनाळा रंग।।
बाहविया बोलै बहुल, मीठा मोर मलंग।
इंदर राजा उनमियो, बरसाळा बहुरंग।।
जीमण ताता जीमणा, ओढण गाभो अंग।
संधीणा हद सांवठा, रंग सियाळा रंग।।
मदछकियो मारू मुदै, साईनां रै संग।
मदरातां हद मोवणी, पड़वा नै पण रंग।।
ढाळूं हिंगळू ढोलिया, पौढै भंवर पलंग।
झीणो बाव झुलावती, रहे बींजणी रंग।।
राचण राजल रसवती, सोजतणी सुभ रंग।
सौभागण सोभा घणी, मैंदी नै मह रंग।।
चौपड़ियो मिल चूड़लो, सखियां रंग सुरंग।
मंगळदाय मजीठ में, रमणी दिन्हा रंग।।
केश ओसरै कामणी, कंचन मुक्ता कंग।
शिव चूड़ा में चंद्र सम, रे ओसरणी रंग।।
सुख उपजत मुख जोयकर, तन में उठै तरंग।
रमणी निरखै रूप नै, रंग आरसी रंग।।
बेलीड़ा मिल बैठिया, उर में उठी उमंग।
खाणा-पीणा खरचणा, रंग हथाई रंग।।
ठकराई हद ठाठ री, कुड़ कुड़ करत कड़ंग।
पंच तत्त्व परतख परस, रंग रे होका रंग।।
रस भीजै सब रंग में, हाका कर हुड़दंग।
फागण गावण फूटरा, रंग होळी नै रंग।।

❖❖

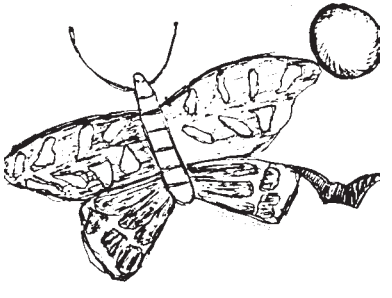

 ISSN : 2320-0995

मांगूसिंह बिशाला

तरै-तरै रा ताळा

जूना ताळा जोरका, मिनखां व्है मजबूत।
खुलता कूंची खासकर, सामै देख सबूत।।
ताळो कदै न तूटतो, कूंची तणो जुगाड़
साचा होता सांवठा, घड़ता मिनख सुघाड़।।
लांठा ताळा लोह रा, पीतळ रा पुरजोर।
कूंटा खुलै न खटकळां, चाबी बिन ज्वै चोर।।
अटकळ सूं घर आदमी, जड़तो ताळा जोर।
जतन करै ज्वै कूंचियां, गजबण सांभै गोर।।
ताळा जग रा देखलो, अलग रूप आकार।
खास तरै री कूंचियां, सही लगाणी सार।।
ताळै री घण कूंचियां, लागै करो विचार।
घालै सही घुमावतां, तांण्या कूंटी धार।।
ताळा तोड़ तिजोरियां, लूटै लंपट लोग।
माल परायो मोफतां, भड़वां रै घर भोग।।
जबर राखता जाबतो, ताळो जड़ै तमाम।
चौकीदारी चौकसी, अवल घणो आराम।।
ताळां री कारीगरी, तरै-तरै रा रूप।
लोग जोए लगावता, आगळ रै अनुरूप।।
टणका ताळा टाळवां, खोल सकै न चोर।
माल रुखाळै मोकळो, परखै घरां बतौर।।
मुरधर में घर मोकळा, परगळ पाळै प्रीत।
ताळै बिन धर देखलो, अव्वल फिरै अभीत।।

❖❖

ठिकाणो :
'ज्ञान पुष्प'
वैणासर नाडी रै नैड़ो
शिवमंदिर, सरदारपुरा
बाड़मेर (राज.)
मो. 9828423356

डॉ. शारदा कृष्ण

अेक

जीव जबरो जंती में आयो
करोना जाव जठै सूं आयो
अमूझ्यो मिनखाचारो साव
जगत में अैड़ो जाळ बिछायो
अठै भर बाथां मिलता लोग
आंतरो दिन-दिन बध्यो सवायो
भूलग्या बार तिंवार उछाव
घणी कळळ झोळी में ल्यायो
'मास्क' भीतर मरगी मुळकाण
हाथ सागी नै सागी खायो
बण्यो नकटो फीटो अणथाग
गळी घर गांव काळ बण छायो
जाव अब मुड़ पाछो मुलतान
मानखो अंतगर आंती आयो

दो

चढ चौबारै चांद बिसूंजै, इतरी रात अंधारी क्यूं
मावस घर-घर फिरै मांगती, किरणां हाथ उधारी क्यूं
चकै तगारी भर-भर सुपना, सीमट बजरी खांचां में
'मल्टीप्लेक्सां' री मजलां में, रिजक मजूरां मारी क्यूं
रात ढळै ज्यूं-ज्यूं रंग बरसै, राजा राज जुआरी रै
झुग्गी झूंपां री बस्ती में, काळी रात अंधारी क्यूं
खेत बेच घर मेल अडाणै, शहरी बाबू बण्यो फिरै
जाळ फंस्यै मिरगै ज्यूं बीरा! मनस्या फेर उडारी क्यूं

ठिकाणो :
आशादीप, पीपराली रोड
सी.एल.सी. रै साम्हीं
सीकर 332001
मो. 9928743194

 ISSN : 2320-0995

बीज बजारां बिकै मानखो, जीवट रै जंजाळ फंस्यो
फिर-फिर पड़बेचां पंचायत, मिनख-मिनख नै भारी क्यूं
खुसी-गमी अर हेत हथायां, 'ज़िफ' 'ईमोजी' ले बैठ्या
आम्हीं-साम्हीं मिल भेंटण में, पग-पग पर लाचारी क्यूं

तीन

अै चिड़ी कागला मोर कठै सूं ल्यास्यां
आ'ड़ै चढिया टाबर कीकर भोळास्यां
ठाडां रै ठरकै डोको डांग बजावै
हीणा झीणां रै कीकर छान छवास्यां
नदियां पाछी जमगी है जाय हींवाळै
हाळी पाळी री तिरस कठै तपास्यां
पिणघट रा घट रीता भड़भड़िया बाजै
नैणां रो नीर कठै कितरो बतास्यां
मिंदर मसजिद रा ऊंचा ठौड़ ठिकाणा
भाठै-भाठै में देव कियां थरपास्यां
पग टिकै जिती पिरथी तो छोड लिरावो
किम उधर-पधर आभै रै हाथ अड़ास्यां

चार

मनगत मन परवाणै क्यूं
बणती बात बिगाड़ै क्यूं
मिनकी मिंदर जावण ढूकी
वीं रा पोत उघाड़ै क्यूं
स्वारथ रो सगपण सगळां रै
न्यारा गोत बखाणै क्यूं
घर मांही घरकूल्या घलतां
बस्ती सीर बसाणै क्यूं
अंतरजाळ अळूझ्यो अंतस
थां-म्हां नै पिछाणै क्यूं
थे थांरै अर म्हे म्हारै हां
झूठा हेत बधाणै क्यूं

❖❖

बी. एल. माली 'अशांत'

राजस्थानी री मूळ क्रियावां

धरती पर आदमी रो आखो हिसाब-किताब शब्द रै कनै है। शब्द आदमी री क्रियावां रो पड़बिंब है। जलम सूं लेय'र मिरतु तलक आखी क्रियावां मृत्यु बाद री क्रियावां रो भी। शब्द में आखो लेखो है। राजस्थानी मिनख रै मौलिक अध्ययन सारू बीं री क्रियावां री सोध नै समझ ही आदमी रै भीतर देखणै रो मारग नै जरियो है। मिनख रो आखो दीठाव शब्द में है।

बिरमांड मांय केई-केई रचनावां है अबोली, पर वै बोलै कोनी। आपसरी में बात नीं करै। चांद, सूरज, तारा, ग्रह, उपग्रह और ई भोत है। पण शब्द फगत धरती रै कनै है। घरण-घरण घूमती धरती री आवाज, ध्वनि मांय ॐ रो उच्चारण मिनख सुण्यो है। धरती री ध्वनि में शब्द ॐ एक शब्द है। धरती में धरती पर शब्द है। आदमी शब्द-नंगारो है। इण शब्द-नंगारै सूं विश्व रा आखा शब्दकोश निसरया है। शब्द-धरती पर खड़ो हुय मिनख बोल्यो है। अै शब्द किणी शब्दकोश में नीं माया। माया अठै मिनख री मूळ क्रिया रो दीठाव है।

आकाश गूंजै, बोलै कोनी। आकासवाणी हुवै।

जलम धरती पर हुवै, आकास रै कनै इसरो नीं है, पग टेकण नै न जगां धरती पर है। समंदर धरती रा जळ-कटोरा। नदियां धरती रा नाळ, पांखी सोभा, जीव-जिनावर चहल-पहल। सो-कीं धरती पर। पहाड़, डूंगर, धोरा सब धरती रा। आदमी धरती रो। आपणा जलम देवाळ भी धरती रा, पुरखा-पूर्वज सैंग। तब अर अब भी धरती रा है।

ठिकाणो :
3/343, मालवीय नगर
जयपुर (राज.) 302017
मो. 9414386649

 ISSN : 2320-0995

आदमी नै जीणै खातर खाई खोदणी पड़ै। जीव-जिनारां, पांख-पंखेरुआं नै भी। अठै सूं ई धरती पर क्रिया सरू हुवै। इण आलेख मांय राजस्थानी मूळ क्रियावां रो अध्ययन करस्यां। बात है, with साथ है।

राजस्थानी क्रिया रूप

क्रिया : साधणो

साहित्यिक प्रयोग—सबद साधणो।

लोक प्रयोग—साधणो=कल्पना करणो, इयां ई साध'र कह देणो, अर्थ देणो।

साधणो=साधना करणो, तपासणो, घोट'र सबद में अर्थ भरणो, संबंध री साधना करती।

बात सबद में नीं मावै। क्रिया : मावै (बरतण में, पेट में)।

क्रिया : ढोळणो (पाणी आद)

ढुळणो (घी, तेल, पाणी)

गेरणो, घालणो : काठी खीचड़ी में, सीरो, दाळ, साग आद में पाणी आद घालणो, तीनूं अलायदा प्रयोग।

पाणी ढोळ आवणो—धींसा जाय'र आवणो।

पाणी गेरणो—सिनान करणो।

पाणी ढोळणो—पाणी बेकार करणो।

क्रिया प्रयोग

खाई खोदीजै, डोळी दिरीजै, भींत चिणीजै, दीवाल करीजै, भींत आडी दिरीजै, बाड़ करीजै, ओथ गेरीजै, ओथ घालीजै। संभाळ दिरीजै/करीजै। संभाळ बांधीजै। बुरो करीजै, भलो भी करीजै। अंबर राचै, मेह मांचै, सीळी चालै, डांफर बाजै। पून चालै, बायरो हालै/चालै। सूंटो चालै, खैंखाट बाजै। आंधी आवै, काळी-पीळी आंधी भी आवै। पाळो पड़ै। पालो काटै, ढीली झाड़ै। जाड़ो पड़ै, सरदी पड़ै। दांत बाजै, डील धूजै, कंपकंपी चढै/छूटै। सरदी लागै। बात घड़ै, बात पड़ै, बात खड़ी हुवै। सुरजी ऊगै, सुरजी चढै, तावड़ो पड़ै, किलकी बाजै, अंबर सूं लाय पड़ै, अंबर सूं आग बरसै, पसीनो छूटै, दिन चढै, तावड़ी हुवै। तावड़ो पड़ै, किलकी बाजै, अंबर तपै, लाय बरसै, पसीनो छूटै, पसेव/परसेव आवै, डील तपै। सुरजी सिर पर चढै, ढळै, छाया हुवै, छाया चालै, छाया आडी पड़ै, छाया सीधी हुवै, छाया पसरै, दिन ढळै, चिलकारो दिन हुवै, सांझ पड़ै/हुवै। अंधारो हुवै, रात पड़ै, मांझळ रात हुवै, भाक् फाटै। डील उसासै, चिकणाई आवै, चैरो पळपळाट करै/पळका मारै, पळका करै, चैरो ओपै, फुटरापो आवै/हुवै। काजळ घालीजै, सुरमो सारीजै, पैंजणी बाजै, बाजूबंद बंधीजै, रखड़ी पैहरीजै, बोरलो बांधीजै, गळसरी पहरीजै, रूप ओपै/रूप चढै, ओप बधै। सिनान संपाड़ा करीजै, पग धोयीजै, डील पर

पाणी गेरीजै, कपड़ा सुखायीजै, तणी बांधीजै/तणीजै, खूंटो रोपीजै/गाडीजै। डील पंपोळीजै, पेट फूलीजै, दांत चालै, मटका करै/करीजै। सगाई हुवै/करै। सगाई/सिजारो भेजै, लगन भेजीजै, ब्यांव मांडीजै, मांडै, बांन/बांद बैठाईजै, बनोरो/बनोरी काढीजै, मांडो रोपीजै, थांम रोपीजै, चंवरी ताणीजै, पीळा हाथ करै/करीजै। टीका/ टीको करीजै, समदोळो दिरीजै/करै, निकासी काढीजै, तोरण मारीजै, जनेत आवै/तोरण सियाळै आवै। किंवाड़ खड़कै, खड़कीजै, खड़कायीजै, आडो बाजै। डाळी तूटै, डाळो बड़कै/टूटै, काच टूटै, बाबो आवै, चीज पड़ै, भेळी करै। डील टूटै। बीज कड़कै, बीजळी चमकै, फांस रड़कै, काच तड़कै। पटकी पड़ै, कुबो हुवै, बाबो आवै, भींत में तरेड़ पड़ै/भींत पड़ै (ओजोन में तरेड़ पड़गी है।)। भैंस रिड़कै, गाय बोलै, बकरी खुर करै, चिड़ी आळ करै, गोरीधण हर करै। कुत्ता लूवै, स्याळिया रोवै, ऊंट अरड़ावै। मतीरा फोड़ीजै, काकड़ी बिनारीजै, काचरो बिनारीजै, लांप, मतीरी, टींडसी बिनारीजै, करेला, सांगरी तोड़ीजै, कैरिया–बोरिया तोड़ीजै। खोका झाड़ीजै, बोरिया भी झाड़ीजै। पग रुपै, कील चुभै, कांटा चुभै, कील खुभै। कांटो लागै, फांस रुपै। खोज देखीजै, खुरखोज काढीजै, खोजां–खोजां चालीजै। पागी खोजा–खोजा चालै, घी चाटै, दूध पीवै, दही चाटै, तिस लागै, भूख लागै। लारै लागै, डाक देयीजै/लागै। जीन कसीजै, ऊंट पलाणीजै। सीमाई करीजै, खाज खोरीजै/करीजै, अळाई फोड़ीजै, चूंटक्या भरीजै/मोड़ीजै। पाघ बांधीजै, पचरंग पेचो बांधीजै। भोभरो फोड़ीजै, टाट कूटीजै, पग तोड़ीजै, गोडा फोड़ीजै/तोड़ीजै, आंगळी मोड़ीजै, डील तोड़ीजै। उबास्यां लिरीजै, उसांसा लिरीजै/भरीजै। आंख मारीजै, सैन करीजै, सांस भरीजै, पून करीजै, हवा लिरीजै, हवा करीजै, पंखो झालीजै, बींजणो करीजै, पून करीजै। चीज पकड़ीजै, झालीजै। जेट लगाईजै, छूरियो चिणीजै, पूंज लगाईजै, थेई लगाईजै, धड़ लगाईजै। खेई लाईजै, पूळा बांधीजै, झाड़ी काटीजै/छांगीजै, पालो झाड़ीजै, ढीरियां खैंगारीजै, लूंग/पालो झाड़ीजै, खळो काढीजै। मूंग/मोठ खैंखेरीजै, गुंवार काढीजै, लाटा लाटीजै, बोरियां भरीजै, गाडा भर–भर लायीजै। खाट बणै, बणीजे, दावण सारीजै, मांचो ढाळीजै, चादर बिछाईजै। धाड़ो देईजै, चोरी करीजै, आंटी ढीली कराईजै रेवड़/अेवड़ उछरै।

मूळ क्रिया

पांघरणो (डील सूं), पसराणो (भात), जात बोलणो (देवतां री), खोजां पड़णो, जीणो, मरणो, चालणो, छणणो, पोवणो, सेकणो, रांधणो, जोणो, उडीकणो, आवणो, नीं आवणो, जी काठो करणो, उडीकनै रह जाणो, भरणो, रीतो करणो, छाणणो, ऊंदाणो, भरोटी बांधणो, ऊंचणो, उखणणो, लाणो, गेरणो, पटकणो, चढणो, उतरणो (चोटी पर), पड़णो, गिरणो (आदमीपणै सूं भी), मारणो (लात भी), कूटणो, कूट खाणो, पिटीजणो, पीटणो। गंडासी बाहणो, कसियो चलाणो, खेत खड़णो, खूंटो रोपणो, पग रोपण, राड़ रोपणी।

बीजी क्रियावां

झींटा ऊपाड़ीजै (घास भी)। गेली काढीजै (गेलो, लीक, ऊमरा भी)। लीक मांडीजै (आखर, कागद, राड़ भी)। रूई पीनै। झोळ घालीजै। झाळ दिरीजै। झा'ल (निचाण) काढीजै (नयी छान री चढावै जद)। झाळ (रीस) काढीजै/आवै/पीटै। छोडा छोलै/छाती बाळै। काळजो खावै/काढै, काढीजै भी। सिसकारा लेवै, करै। बार घालै। घास उपाड़ै/खोदै। दूचाबड़ी उपाड़ै। बैरूं काढै। निनाण करै। गीत गींरै (गीतेरण), लारै गावै (लुगायां)। चबका चालै। रीळ उठै/चालै। चोट लागै/खावै। कागा बोलै। फेरा लावै (गाडा)। फेरा खावै (चक्कर, ब्यांव रा भी)। जग सोवै। चातरक जागै। बात जीतै, बात हारै, बात जीवै, बात मरै। तूमत करै। बिसांई लेवै।

क्रियावां

पींनणो। काढणो (बेज, घरट, नांव, सिंगी, राख)। हारणो (चाकी)। टांचणो (चाकी, भाटो)। बणाणो, काढणो, पहरणो, फोड़णो, तोड़णो (चूड़ी)। गावणो (भजन, गीत), गीरणो (गीत लुगायां रो)। जड़णो (कूंटिया, आडो, किंवाड़, चनपट)। गिरदानणो (बात)। करणो (काम, आटा-साटा भी)। दूहणो, काढणो (दूध)। बिलोणो (थूक, दही), बिदोलणो (मूंडो, मुंह)। बजाणो (जातीका, पेटीबाजो, ढप, ढोलक, मंजीरा साथ)। बांधणो (बुराई, भारो, पाणी, पेट, भूख भरोटी, पुळा, छुरियो, पंजाळ, डांगर, सांसर)। बणणो (मूरख, बावळो, मिठाई, खाणो, साग)। पोणो, पोवणो (रोटी), बेलणो (फलका, पापड़), रंगणो (गांव, गाभो, गाभा), बड़णो (भूतणी, भूत, चोर), लागणो (ओचांट लारै)। चराणो (आदमी, भैंत, लरड़्यां, बकरी)। चरगी (अक्कल, खेत)। तिरणो (तळाव, जोहड़ी, जोहड़ो)। तरणो (भवसागर, बैतरणी)। घड़णो (घड़, सबद, उपाय, टाळा, गैणां)। सेकणो (घाणी, भूंगड़ा, मूंगफळी, रोटी)। कसणो (जीन, कसणां, आदमी)। बेचणो (बेचो, चीजां, घर-बार सैं कीं, अपणै आपनै भी)। धोणो (आदमी नै भी, गाभा, कासण-बरतण, हाथ)। जणणो (बेटा, बेटी)। जणाणो (जापो करवाणो)। देणो (धाड़ो, धहड़, कोई चीज, बात)। गेरणो (डाको, नाज, निसांस, आपको, चीज, बात, मिनखपणो)। होणो (जाग, होती, काम, सत्यानास, विणास)। जगाणो (सुरता, जाग, सूतां नै)। जागणो (सो'र, सोयनै)।

सोड़-सोड़िया बिछाईजै/लगाईजै, तकिया गीधवो लगाईजै, पिलंग बणाईजै, ढाळीजै। निंवार सारीजै, ढाणी निवार सारी, पिलंग बिछाईजै। बुहारी (भुआरी) बासी बुहारी काढीजै। रसोई बणाईजै, बतरण-तवो मांजीजै। तवो चढाईजै। कढावणी चढाईजै, दूध तातो करीजै/कढायीजै। दही जमाईजै, दही बिलोईजै, घी काढीजै। घर, चौक बुहारीजै, फुहारो काढीजै, आंगणो पोतीजै। अलेवण जचाईजै, चीजां सांभीजै, घर जचायीजै। चूल्लै री बेलणी मांय सूं राख काढीजै, भोभर काढीजै, चूल्लो बाळीजै, बाती बाळीजै, लकड़ी

जळाईजै, बासतै बाळीजै (तळै–तळै भी)। रोटी, फलका पोईजै, फलका बेलीजै, रोटी सेकीजै, आकरी करीजै, खीरा खसराईजै। झाळ आवै, चूंचकाड़ी लगावै, बात बणाईजै। नखरा करीजै, मटका करीजै, खटका दिखाईजै। कांटो ओलैजै, राबड़ी रांधीजै, खीचड़ी बणाईजै, बाजरो ऊंखळी मांय सूं काढीजै, हळकी चोट दिरीजै, चूरमो बणाईजै। खेत जाईजै। बोजा काटीजै, हळसोतियो करीजै, हळाई काढीजै, खेत, बात बोयीजै, ऊमरा काढीजै, हेलो दिरीजै, हेलो करीजै, हैलाल, रोळो करीजै। गौर पूजीजै, लासू लाईजै, गोबळिया काढीजै/लाईजै, झुवांरा (जुवांरा) ऊगाईजै, माटी लाईजै, गीत गीरीजै, गीत गाईजै, गौर पधराईजै। पोतड़ा (पीळा) धोईजै, सावड़ हुवै, कूवो पूजीजै, दसोटण करीजै, पोतड़ो भेजीजै, छट पूजीजै, स्यावड़ काढीजै। छांन, टापरा चुवै, टपका (टोपा) पड़ै, घड़ो झरै, झाल, माट, कळसा भरै, जळ चढाईजै। मंडाण आवै, बरखा पड़ै, मेह बरसै, मूसळाधार बरसै, खाडा, जोहड़ी, तालरा भरै। भाळ चालै, सूंटो आवै, आंधी चालै, सीळी चालै, डांफर बाजै। कोढियो पाळो पड़ै। चढै, उतरै, नाचै पड़ै, लड़थड़ै (तालरै में, पाणी में)। धड़ो करीजै, धड़ै चढाईजै, नाज तोलीजै, छांटी ढाळीजै। बिछात लगाईजै/करीजै, बोरो/कट्टो भरीजै, आधी बोरी करीजै। मिंदर देवरै जाईजै, पूजा आरती करीजै। आरती हुवै, तिलक काढीजै, पंजीरी बांटीजै, चिरणाम्रत देवै/लेवै, प्रसाद बांटै, नोपत बाजै, झालर बाजै, दीवा जोवै, धूप खेवै, दरसण करीजै, फेरी देयीजै। गीड आवै, गीड काढीजै। डोका चाबै, पोठो करै, तरड़ो हुवै, तरड़ो करै। खोबा करीजै/देईजै/काढीजै (पुराणी चुभती बात कैबो)।

❖❖

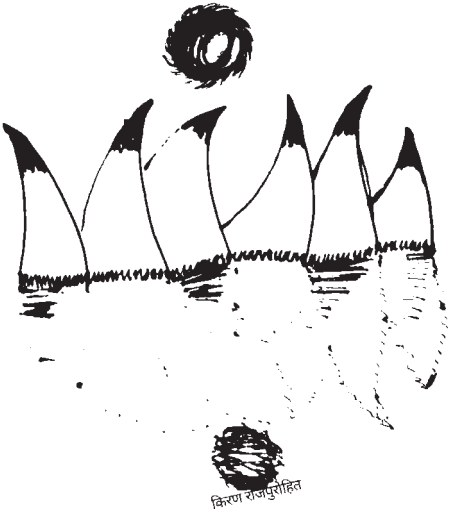

 ISSN : 2320-0995

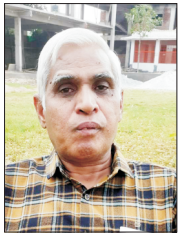

कुन्दन माली

परंपरा, संवेदना अर संस्कार में बदळाव रो अरथाव

मीठेस निरमोही री कवितावां (संदर्भ : 'मुगती' कविता-संग्रै) रो खास सरोकार अर चिंता मौजूदा समै रै दौर में अेक सूं बेसी कारणां रै पाण जूण; संस्कार; संस्कृति; गाम अर स्हैर रै ढंग-ढाळै; परंपरा अर जीवणमूल्यां में आवण वाळी टूट-फूट; छीजत अर कमी माथै केंद्रित निगै आवै अर साथै ई साथै आपरी आंचलिक कुदरती धरोहर रै धारोधार नास री प्रक्रिया माथै आपरी पीड़ अर दुख उजागर करण री दीठ सूं कवि री सावचेती ई प्रगट व्है। आपरी जमीन, जड़ां अर जूण में गहरै विस्वास अर हेतभाव रै साथै-साथै रचनाकार री संवेदना रा जीवता-जागता दरसाव अठै मौजूद है अर साथै ई साथै मौजूद है कविता रै मुद्दै सूं अेकमेक भासा रो संस्कार, मुहावरो अर भासा री सुभावगत गैराई में रची-बसी अनुभूतियां अर कवि रा अनुभव जगत रो पसराव। घर-परिवार रो परिवेस; पीढियां रै मनगत आंतरै; सामाजिक अर राजनीतिक वैवस्था रै साम्हीं निजू भासा री हालत अर बरताव इत्याद घणकरा विसय अठै प्रगट व्हिया है अर अै चूकता समै रै दबाव, बजार रै पसराव अर भाव-जगत रै खिंचाव रै पाण मगसा पड़ता जावै है। जटिलता री आ प्रक्रिया ईज कवि री चिंता नै सक्रिय बणावै। भासा अर आतमविस्वास रै पाण ईज कवि नै भरोसो है कै वौ तमाम अबखायां सूं पार पाय जावैला, इण वास्तै कैवै :

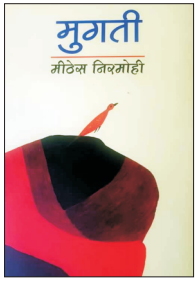

अे कविता! / थावस राखजै कै / थारी इण अटकळां री जुगत / मछरां करतोड़ै लेणायतां अर / विस्व बजारां नै / बकार लेवांला म्हे / अखरै ई / थारी इण अटकळां री जुगत। (पानो 24)।

ठिकाणो :
170, टेकरी
उदयपुर 313002
मो. 8003355541

कवि रा बिम्ब अर प्रतीक स्थानीय रंगत में रचिया-बसिया है अर विविध रंगा ई है अर भासा में आपरै निजू मुहावरै रै पाण वौ आपरै मुद्दै नै असरकारी ढंग सूं पूगावण में सिमरथ है। कवि जूण में हरेक आछी चीज नै बचावण खातर खपै, क्यूंकै आपां रै साम्हीं हरेक दिसा सूं खतरा अर ललकार मौजूद है :

पूरसल चेतना रै समचै / बजार रै साम्हीं छाती / पग रोप ऊभा हां म्हे / के बची रैवै—/ कविता अर आखरां री मरजाद / बची रैवै प्रीत / रिस्ता-गना / मिनख अर मिनखापणो / बचिया रैवै / सुपना, सबद अर अटकळां / पोथ्यां अर रमेकड़ा / टाबरां री भावी पीढियां सारू। (पेज 49)

तेजसिंघ जोधा रै सबदां में, ''कवि मीठेस 'राग अर नाद' कविता में हरजस उगेरती, घट्टी मांडती मां, परभाती गावती चिड़कलियां अर आभै ऊगतै सूरज री उगाळी नै आपरी कविता में सांप्रत करै अर दिनूगै री सगळी हलचल अर कारज, वौपार आपां री आंख्यां साम्हीं प्रगट होय जावै।''

सामाजिक संस्कारसीलता में आवती छीजत अर परंपरा में आवतै बदळाव टाळ कवि री निजर सांप्रत राजनीति री नीत अर आपां री नियति रै बिचाळै मौजूद आंतरै रै सांच नै उजागर करै अर आगै जायनै आ दीठ पीढियां रै बिचाळै मौजूद आंतरै सुधी जाय पूगै। राजनीति रो सांच प्रगट करती ओळ्यां है :

म्हांनै अेक घड़ी पैरावै वागा / अर दूजी ई घड़ी म्हांनै / पाछा कर देवै नागा / माळी पांना चेपण अर / उतारण मांय / रे डयाळ! / कितरी महारत है थनै / अबकै आवजै देखांणी / म्हारी ढांणी / रैवांण रै टाणै / गीत गवावण आजादी रो। (पेज 43-45)

मिनख अर राजनीति रै बीचै मौजूद आंतरो तो दुखदायक है ईज, पण जूनी पीढी अर नवी पीढी रै आंतरै सूं उपजण वाळी पीड़ री थाह लगावणो अबखो काम है। इण संदर्भ में 'मुगती-2' कविता ध्यान देवण जोग है :

बगत-बेबगत / काळजै रै डांमीज्यां / धार लियौ हौ म्हैं / घड़ी-घड़ी अपमानित व्है / खिण-खिण / अकाळ मौत मरणै सूं / भलौ है / आपौ आपसूं मुगत व्हैणौ... / नीं-नीं, इतरौ हिम्मतहार / नीं व्है सकूं म्हैं / आपरै पांती आया दिनां तांईं / जीवण सारू / जे लड़णौ पड़ैला अेक ओरूं जुद्ध / आं सूं / अर आपौ आपसूं / तौ लड़ूंला म्हैं / निसंक रैजौ थे। (पेज 123)

चितारणी कै ओळ्यूं आं कवितावां रो खास अर थिर भाव नै मोल है अर इण वास्तै ईज कवि नै आज ई आपरो गाम; बाळपणो; वठा रा खेत-खळा, पसु-पंखेरू, वनापाती, नदी-नाळा, रिंधरोही, कुदरत री विरासत अर पिता रा दीधा थका संस्कार लगोलग चेतै आवै, पण उणरी खास चिंता इण सूं जुड़ी थकी है कै कांई आपां आपणी आगली पीढी नै अै संस्कार सूंप सकांला अर किण भांत सूं औ संभव व्हैला :

देयनै दांन / करिया पुन्न / धरम निभायौ / सुख-दुख रै / संगातियां रै सांढै / लेली सांस / धापनै आप अर / वेळा छती बताता जावौ / आगत सइकौ / कितरौ अबखौ ? (पेज 33-34)

अठै आपां धोरां रै फुठरापै अर सांस्कृतिक परिवेश रै साम्हीं बाजारीकरण री तागतां रै बधतै जावतै असर रै कारण कवि री सोच-फिकर नै ई सुभट देख सकां। इण सूं ठाह पड़ै कै कवि री दीठ घणी फैली थकी अर गैरी ई है। इण बात री साख में अै ओळ्यां :

समदर री जात / संगीत रै हबोळां / चढग्यौ हौ सम / खम्मा घणी अन्नदाता ! रै संबोधण / परगट व्हियौ हौ सम / उणीज कळावंत री जात / म्हा सगळां री बकसीस अंगेज्या / फेरूं-फेरूं मुळक्यौ हौ / जजमांनी रा दूहा खळकावतौ / जांणै / किणी देस सूं उतर आयी / चीलगाडी रा धणी / के किणी रजवाड़ै रा / जागीरदार हां म्हे ! (पेज 128)

भासा सूं कवि रो रिस्तो अेक सूं बेसी स्तरां माथै सक्रिय निगै आवै। भासा उणरै वास्तै जीवण री वाणी; विचार प्रगटाव रो जरियो; संस्कृति नै मनगत सूं जोड़ण वाळो अटूट पुळ; हरख-सोक; मंसावां अर कामयाबी नै उजागर करण रौ माध्यम अर असल में परंपरा रै संस्कारां अर संस्कारां री परंपरा नै अरथावण रो साधन है। इण वास्तै आपां कैय सकां कै भासा उणरी दीठ में प्राणवायु सूं रत्तीभर ई कमती कोनी। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति रै हलकां में छेकड़ला कित्ता ई बरसां सूं राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता रो मुद्दो जीवंत है अर इणरो दुख हरेक राजस्थानी मिनख रै मन में सरजीवण है। लगैटगै हरेक कवि इण माथै आपरी पीड़ उजागर करी है। 'मातभासा री पीड़' कविता में कवि लिखै :

म्हारी पीड़ तौ / म्हनै ई सेवणी पड़ै है / अर सेवूं ई हूं म्हैं / पण कळपै है / म्हारा सिरजणहार / म्हारै ई मुहावरां ढळियोड़ा / कै 'दुखै जिणरै चिरपड़ै, लागै जिणरै पीड़' / घणी ई थनै आ बात बतावतां / हैपीजण ढूकूं म्हैं / यूं किणनै लाज नीं आवै / साथळ उघाड़तां आपरी / घणा ई / म्हारै ई रगत रचीज्या है / आडी अर ओखांणा / जिका आज तांई / वकारता आया है / मिनखां री मरदानगी / म्हारौ दोस / घणौ ई को है नीं / अऊतियां रौ घर / अजै अठै / मावां को तुई नीं है। (पेज 99-100)

मौजूदा दौर में मिनख री लालची प्रवृत्ति रै पांण कुदरती संपदा रो अंधाधुंध विणास अर पर्यावरण रो नुकसाण दिनूंदिन बधता जाय रैया है अर इण रो पाधरो नतीजो है वैश्विक स्तर माथै होवण वाळै जळवायु में बदळाव अर इण बदळाव रै कारण साम्हीं आवती नित-नवी समस्यावां—सामाजिक; सांस्कृतिक; स्वास्थ्यपरक; मानसिक स्तर माथै। रितुवां रो कुदरती चक्र अेकदम ऊंधो व्है जावण रा नतीजा आपां भुगत ईज रैया हां। आं तमाम हालात माथै कवि री निगाह बराबर बणी रैवै अर इणीज दीठ सूं 'तौ सुणौ भायलां'

कविता खासी उल्लेख जोग निगै आवै, जठै वो अेक साथै संबोधन सैली में चूकता जिम्मेदार लोगां नै इण खतरै सूं सावचेत ई करै अर पर्यावरण नै बचावण री अपील करै :

आं रूंखड़ां री ई / डाळियां खूंट / धाप-धुड्डु व्है / पांणी पीय / तिरपत व्है जावै अेवड़ अर / टोळा ऊंटां रा / आं री ईज जड़ियां, फूल-फळियां अर / पांनड़ियां बणै ओखद न्यारी-न्यारी / सजै काम वेदां रा / हारी-बेमारी / आंरै ई छंवरा मापीजै / आखै भुवण / काळी-पीळी आंधियां रौ जोर / आंनै सांम्ही छाती / पग रोप ऊभा देख / आथड़ण री जागै हूंस / मिनखाजूंण / आं सूं ई व्है / धूप-तावड़ अर छीयां रौ ग्यांन ××× ××× अै ई पूरै फींफरां सांस / गरीब अर अमीर नै। (पेज 62-63)

मिनखाजूण रै वास्तै जरूरी सांप्रत अर सनातन विसयां माथै आधारित 'मुगती' री कवितावां आपरी लय, रवानी अर गतिसीलता रै पाण आपरै कथ्य अर बुणगट रै सांतरै संतुलन साथै कवि री जरूरी चिंतावां नै समै रै सैपूंचै बदळाव रै उजास में प्रगट करै अर साथै ई साथै आपरी सुभाविक रंगत अर सिरजणाऊ जिम्मेदारी रो अैसास ई करावै। इण वास्तै अै अेक न्यारै अैसास वाळी रचनावां मानी जाय सकै। आपरी जड़ां; जमीन; परंपरावां अर समाजू-सांस्कृतिक परिवेश में खासी गैराई सूं जुड़ी थकी अै रचनावां आपरै लोक मुहावरै नै अंगेजती बगत आपरै समै रै असली उणियारै नै रेखांकित करण वाळी सार्थक कवितावां है। 'रचाव' कविता इण बात री साख भरै :

म्हारी सिरजणा री इण / चिणग्यां रै पळकै / आपरी जीवण राह अर / कराळ दुख-संताप रै / परबतां नै उलांगती / धर मजलां धर कूचां / बगतां-बगतां उण रा पग / अपड़ लेवैला आपरी मंजल रौ गेलौ / अेळी नीं जावैला उणरी मिनखाजूंण / इण बात नै अंगेजतां कै / मिनख नै मिनख बणायौ राखण सारू / सिरजण घणौ जरूरी व्है / ××× ××× म्हनै अभिव्यक्त व्हैतौ रैणौ है। (पेज 115)

❖❖

पोथी	:	मुगती
विधा	:	कविता-संग्रै
कवि	:	मीठेस निरमोही
प्रकासक	:	मरुवाणी प्रकासण
		राजोला हाउस, उम्मेद चौक, जोधपुर 342001
संस्करण	:	2019
पाना	:	136
मोल	:	300 रुपिया

 ISSN : 2320-0995

कंचन आशिया

लयबद्धता अर ध्वन्यात्मकता री त्रिवेणी

जिण कवियां आपरी छोटी वय में आपरी रचनाधर्मिता री विश्वसनीय साख बणाई, उणमें युवा कवि-साहित्यकार महेन्द्रसिंह सिसोदिया 'छायण' रो नांव हरावळ में गिणीजै। 'रूड़ो राजस्थान', 'कलम अर कटार', 'राजेन्द्र रूपक' जैड़ी कृतियां देय'र साहित्य जगत नै समृद्ध करणियै श्री छायण री सद्य प्रकाशित काव्य-कृति है—'इण धरती रै ऊजळ आंगण'।

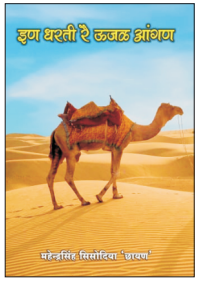

महेन्द्रसिंह सिसोदिया 'छायण' री रचनावां लोक-संस्कृति रै रंग में रंग्योड़ी, परंपराबोध सूं जुड़्योड़ी, समकालीन स्वर में घड़्योड़ी, जीवण-रस सूं भीनोड़ी आम जन रो जीवंत दस्तावेज है। डिंगळ गर रा राही होवण रै कारण इणां री कवितावां डिंगळ शैली सूं प्रभावित है। इणां में छंदां री चित्तहरणी छटा साफ निगै आवै।

आलोच्य कृति 'इण धरती रै ऊजळ आंगण' में 32 मुक्त छंद कवितावां है, जिणां नै कवि तीन खंडां में बांटी है। महेन्द्रसिंह छायण लोक रा कवि है। इणां री सगळी कवितावां प्रबंधात्मक है, जिणमें कथ्य पण सांतरो है। कवितावां में अेक विसेस लय है। अठै आ बात कैवणी ठीक रैसी कै छायण री कवितावां गेयता, लयबद्धता अर ध्वन्यात्मकता री त्रिवेणी है। पढेसर इण संग्रै री कवितावां पढता थकां लय रै साथै बैवण लागै। राजस्थानी रै समकालीन युवा कवियां में इण तरीकै री कवितावां म्हारै अजै तक साम्हीं नीं आयी। श्री छायण इण बगत रा विश्वसनीय रचनाकार है, जिकां माथै आखै राजस्थानी जगत नै पतियारो है।

ठिकाणो :
व्याख्याता राज. विज्ञान
रा. उ.मा. भिंयाडिया
लोहावट (जोधपुर)
मो. 8875134787

इणमें कोई दो राय कोनी कै छायण री कवितावां इण समै पाठकां नै रचनाकारां सूं जोड़ण री मुहिम है। जादुई लय रै कारण अै कवितावां लोक रै घणी नैड़ी। लोक री सगळी अनुगूंजां आं कवितावां में समाहित है। श्री छायण मानवीय सरोकारां रा कवि है। इण संग्रै री कवितावां अतीत री ऊजळी आभा, संवेदनापूर्ण प्रभा री बानगी है तो मिनखपणै री जड़ां नै पोखण आळी पण है। छायण री कवितावां री भासा टकसाळी होवण रै कारण रूपाळी अर मनमोवणी है। कवि रो सबदकोस घणो व्यापक है। डिंगळ रै सुप्रसिद्ध कवि डॉ. शक्तिदान कविया ई कवि छायण री सबदावळी री घणी प्रसंसा करी है तो केई समकालीन वरिष्ठ कवियां छायण नै अेक विसेस भासाई मुहावरो इजाद करण वाळो रचनाकार कैयो है। इण संग्रै री कवितावां में प्रकृति रो सरावणजोग मानवीकरण हुयो है। 'मेह रा कोड', 'हे हरियाळा रूंख', 'सांझ सुंदरी' सिरैनामै सूं लिख्योड़ी कवितावां इणरो उम्दा उदाहरण है। मरुभोम रै सांस्कृतिक बिम्बां रै साथै नया रूपक अर प्रतीकां रो प्रयोग आं कवितावां री विसेसता है।

इण संग्रै री कवितावां में जीयाजूण रा अनेकूं रंग देखण नै मिलै। हेत-प्रेम, अपणास-विश्वास, आशा-निराशा रा अनेक चित्राम आं कवितावां में है। आथूणै राजस्थान रो लोकजीवण, सामाजिक-राजनीतिक विद्रूपतावां, रूढियां पर प्रहार अर संवेदना री सशक्त अभिव्यक्ति आं कवितावां रो मुख्य स्वर है। कवि राजनेतावां नै आडै हाथां लेवै, वठै ई आमजन नै ई करम-पथ माथै अग्रसर होवण री सीख देवै। निश्चित रूप सूं महेन्द्रसिंह छायण आपरै समकालीनां में विशिष्ट है तो आथूणै राजस्थान रा दैदीप्यमान कवि है, जिणां रो प्रभामंडल डिंगळ री लयकारी सूं लेय'र समकालीन राजस्थानी कविता रै साथै गद्य री अनेक विधावां तक व्यापक है। इणां रो सांवठो सिरजण साहित्य री जड़ां रुखाळण री हिमाकत करै।

❖❖

पोथी	:	इण धरती रै ऊजळ आंगण
विधा	:	काव्य
कवि	:	महेन्द्रसिंह सिसोदिया 'छायण'
प्रकासक	:	रॉयल पब्लिकेशन, 18, शक्ति कॉलोनी, गली नं. 2, लोकोशेड रोड, रातानाडा, जोधपुर 342011
संस्करण	:	2019
पाना	:	96
मोल	:	250 रुपिया

 ISSN : 2320-0995